नवम्बर 2026

दादावाणी

Retail Price ₹ 20



मैं एक बार लंबा सफेद कोट पहनकर शादी में जा रहा था। तब किसी ने ऊपर से पान थूका। कोट फर्स्ट क्लास लाल दिखने लगा। तब मुझे विचार आया कि उसका थूकना और मेरा यहाँ पर होना, वह भी यहाँ पर ही, मेरे साथ ही यह हिसाब कहाँ से आया? ऐसा विचार करते-करते ही 'व्यवस्थित' मिला।

पर्थ : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 19 से 21 सितम्बर 2026


सत्संग


ज्ञानविधि




इन्फोर्मल


दर्शन


सत्संग

सिडनी : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 25 से 27 सितंबर 2026





ऑस्ट्रेलिया शिविर : ता. 28 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2026


स्वागत


सांस्कृतिक कार्यक्रम


भक्ति


सत्संग


दर्शन

वर्ष : 22 अंक : 1
अखंड क्रमांक : 253
नवम्बर 2026
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2026
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
3 साल
भारत : 700 रुपये
वार्षिक
भारत : 240 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

'व्यवस्थित' की आज्ञा का उपयोग करें व्यवहार में - 1

संपादकीय

परम पूज्य दादा भगवान का इस वर्ष गुरुपूर्णिमा के निमित्त जो संदेश है, उसे हम इस रूप में लेंगे कि अपने रोज़मर्रा के जीवन व्यवहार के हर प्रसंग में व्यवस्थित की आज्ञा को समझकर प्रैक्टिकली उपयोग में लेना है। दादाश्री कहते हैं कि ज्ञान से पहले 'मैं ही चंदू हूँ' और 'मैं ही कर्ता हूँ', ऐसा मानते थे। संयोगों के कर्ता बनने से और संयोगों में तन्मयाकार रहने से हम राग-द्वेष के चक्कर में फँसे हुए थे। अब ज्ञान के बाद प्रत्येक संयोग व्यवस्थित के अधीन है, यह बात जैसे-जैसे जागृतिपूर्वक बैठती जाएगी, वैसे-वैसे संयोगों के कर्ता हम नहीं हैं, कर्ता 'व्यवस्थित शक्ति' है, ऐसा समझ में आने से खुद का कर्तापन छूटता जाएगा और वैसे-वैसे मुक्त दशा अनुभव में आएगी।

अब व्यवस्थित का ज्ञान प्रैक्टिकली कैसे उपयोग में लें? पारिवारिक व्यवहार में माता-पिता, पति-पत्नी, बच्चों या अन्य सदस्यों से अपेक्षाएँ रहती हैं। वे पूरी न हों तो दु:ख होता है। वहाँ सामने वाले को कर्ता मानकर सुधारने जाते हैं, तब 'व्यवस्थित' का ज्ञान चूककर सामने वाले को दु:खी करते हैं और खुद भी दु:खी होकर दो नुकसान उठाते हैं। नौकर के हाथ से महँगे दामों के काँच के कप-प्लेट गिरकर टूट गए, तो क्लेश करने के बजाय, 'ये किसने तोड़ें?' तो तोड़ने वाली है 'व्यवस्थित' शक्ति! यानी 'व्यवस्थित' कहते ही भीतर समता रहेगी। व्यवस्थित का ज्ञान रौद्रध्यान और आर्तध्यान, दोनों बंद करवा दे, ऐसा है। 'व्यवस्थित' का अर्थ क्या? इस जगत में कोई दोषी है ही नहीं।

जीवन व्यवहार में क्लेश और झंझट कब होते हैं? जब हम *'धार्युं'* (मनमानी) करने का आग्रह रखते हैं, तब। क्या हमारे *धार्युं* अनुसार हो, ऐसा व्यवस्थित होता है? सचमुच में तो हमारा *धार्युं* एक सेकन्ड भी नहीं होता। यह तो संयोगों से कार्य होता है और खुद इगोइज़म करता है कि मैं करता हूँ। लोगों को *धार्युं* करवाने की आदत पड़ी हुई है न, इसीलिए 'व्यवस्थित' कड़वा लगता है। अपमान के समय दु:खी होने के बजाय 'व्यवस्थित है' कहकर खोज में पड़ना है कि 'यह गोली कैसे लगी? आई कहाँ से? मारने वाला कौन? क्या हुआ? किसे लगी? हम कौन?' 'व्यवस्थित' के ज्ञान के आगे बुद्धि बंद हो जाने पर खुशी-खुशी जो हुआ वही न्याय, उसका स्वीकार हो जाएगा।

सारा जगत् टेन्शन-चिंताओं और बैर-ईर्षा में ही फँसा है। ऐसे में सर्व समाधानी 'व्यवस्थित' का ज्ञान समझ में आ जाए, तो बहुत से दु:ख कम हो जाएँ और भीतर निरंतर समाधि रहे। भूतकाल की चिंता तो जा चुकी ही है, पर 'व्यवस्थित' के ज्ञान से महात्माओं को भविष्य की चिंता नहीं रहती और वर्तमान में रहा जाता है। यथार्थ 'व्यवस्थित' समझ में आए तो खुद को राग-द्वेष नहीं होते। सच्ची पढ़ाई तो तभी की हुई कही जाएगी, जब एक्ज़ेक्टनेस में व्यवस्थित की आज्ञा समझकर सर्व दु:खों से मुक्त होकर वीतरागता के मार्ग पर पुरुषार्थ शुरू हो जाए!

जय सच्चिदानंद

'व्यवस्थित' की आज्ञा का उपयोग करें व्यवहार में - 1

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

संयोगों को इकट्ठा करने वाली व्यवस्थित शक्ति

प्रश्नकर्ता : दादा, आप जो बता रहे हैं कि, 'व्यवस्थित शक्ति चलाती है' तो यह समझाइए कि वह किस प्रकार से चलाती है।

दादाश्री : यह दूध होता है न, एक मन (मण) दूध हो, उसमें आप थोड़ा दही मिलाते हो, अच्छा दही। फिर उसे हिलाकर रख देते हो। तो कौन सी शक्ति उसे दही बनाती होगी?

प्रश्नकर्ता : कुदरत।

दादाश्री : वही व्यवस्थित शक्ति है। कुदरत कोई चीज़ नहीं है। कुदरत अर्थात् संयोगों का इकट्ठा होना। संयोग इकट्ठे होने का प्रयत्न होने लगे तो उसे कुदरत कहते हैं और संयोग इकट्ठे हो जाने पर उसे कहते हैं 'व्यवस्थित'। साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स, सांयोगिक प्रमाणों के इकट्ठे होने से कार्य होता है। वर्ना कार्य नहीं हो सकता। उन संयोगों को इकट्ठा करने वाली एक शक्ति है, जो 'व्यवस्थित' नाम की शक्ति है।

यह तो, 'व्यवस्थित' जगाता है, और 'व्यवस्थित' सुलाता है। सबकुछ 'व्यवस्थित' ही करवाता है। लेकिन खुद को यह समझ में नहीं आता। सभी संयोग इकट्ठे होते हैं, तब खिचड़ी बनती है। इसमें चूल्हा ऐसा नहीं कहता कि 'मैंने बनाई', पतीली ऐसा नहीं कहती कि 'मैंने बनाई है', लेकिन सिर्फ यह मनुष्य ही बोल उठता है कि, 'मैंने बनाई है'। क्योंकि अन्य सभी चीज़ों में अहंकार नहीं है न! और सिर्फ मनुष्य में ही अहंकार है, इसलिए मान बैठता है कि मैंने ही बनाई! मैंने बनाई कहने से बन गया खुद कर्ता और कर्ता बन बैठा, इसलिए नियम से उसे भोक्ता बनना ही पड़ता है। जहाँ सही ज्ञान हाज़िर हो जाए कि, 'सभी संयोगों के इकट्ठे होने से खिचड़ी बनी, सिर्फ मैंने ही नहीं बनाई', तो वह कर्ता नहीं बनता और फिर उसके लिए उसे भोक्ता भी नहीं बनना पड़ता।

वैज्ञानिक संयोगों से चले जगत

प्रश्नकर्ता : हम इस जगत् को साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स कहते हैं, तो इसमें 'साइन्टिफिक' में तो कॉज़ एन्ड इफेक्ट आते हैं लेकिन 'सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' अभी पूरी तरह से समझ में नहीं आता।

दादाश्री : जैसे ये वकील क्या कहते हैं कि आँखों देखा एविडेन्स। आँखों से दिखाई दें ऐसे एविडेन्स, कहते हैं। ऐसा नहीं कहते? 'आई विटनेस' कहते हैं न? वे किस बात का प्रमाण देते हैं?

प्रश्नकर्ता : जो देखा हो, उसका।

दादाश्री : जो देखा होता है, उस पर से सारे प्रमाण इकट्ठे करते हैं, जो देखा उस पर से। क्या-क्या देखा था, कैसे देखा था, वैसे आँखों से दिखाई देने वाले प्रमाण। और ये इन आँखों

से नहीं दिखाई देते, ऐसे प्रमाण इसलिए साइन्टिफिक, वैज्ञानिक। इसमें पूर्व जन्म में जो भाव किया था, वह संयोग, साथ में अन्य कितने ही संयोगों के इकट्ठे होने से, टाइम-स्पेस सभी कुछ। अभी जहाँ बैठे हो न, वह स्पेस भी निश्चित हो तभी यह बातचीत हो सकती है, वर्ना नहीं हो सकती। कोई कहे कि, 'मैं फलाना समय पर ऐसा करूँगा', ऐसा कुछ भी नहीं चलता। यानी टाइम, स्पेस और पिछले जन्म के भाव, मेरा संयोग, और अन्य कई संयोग इकट्ठे हुए, तब यह कार्य हुआ!

अर्थात् यह जगत् वैज्ञानिक संयोगों से ही चलता रहता है। जिस तरह आँखों देखे हाल को एविडेन्स कहते हैं, उसी तरह ये वैज्ञानिक, गुह्य संयोग जो प्रकट होते हैं, आपको बुद्धि से पता नहीं चलता कि कौन-कौन से संयोग इकट्ठे होते हैं। एक संयोगी प्रमाण नहीं, अनेक संयोगों के मिलने से यह कार्य होता है।

दीस इज़ बट नैचुरल। कोर्ट में सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स होते ही हैं, लेकिन साइन्टिफिक नहीं होते। वहाँ पर तो आँखों से दिखाई दें वैसे होने चाहिए जबकि ये आँखों से नहीं दिखाई दें ऐसे, वैज्ञानिक संयोग। जैसे 2H (दो हाइड्रोजन) और O (एक ऑक्सीजन) मिल जाने से पानी बन जाता है। वह वैज्ञानिक संयोगों से हुआ। उसी तरह ये सारे भी वैज्ञानिक संयोग हैं!

महँगे प्याले टूट जाएँ तो...

अब, 'व्यवस्थित शक्ति' अर्थात् क्या? वह समझाता हूँ।

अब, नौकर के हाथ में से ट्रे गिर जाए, उसमें रखे बीस प्याले गिर जाएँ, बीस प्याले यानी अभी तो बहुत महँगे हैं, दो-दो रुपये के या तीन-तीन रुपये के कप-प्लेट आते हैं, बीस तीया साठ रुपये। तुरंत ही अंदर असर होगा या नहीं? यह 'ज्ञान' नहीं लिया हो तो असर होगा या नहीं होगा लोगों को? यह 'ज्ञान' नहीं लिया हो न तो अंदर अकुलाता रहेगा। जब सभी बैठे होते हैं तब कुछ नहीं बोलता लेकिन अंदर अकुलाता रहता है कि ये सब जाएँ तो तुरंत मारूँ नौकर को! अब वास्तव में 'किसकी भूल है', ऐसा भान नहीं है और ऐसा करता रहता है। और यदि नौकर तोड़ता होता तो क्या रोज़ नहीं तोड़ता वह? आज कैसे तोड़े? यदि नौकर तोड़ता होता तो यह रोज़ का ही है। आप उससे कहो कि, 'ये कप-प्लेट फेंक आ', फिर भी नहीं फेंकेगा। मैं इन छोटे-छोटे बच्चों को, दो-दो, तीन-तीन साल के बच्चे होते हैं, उनसे कहता हूँ कि, 'ये कप-प्लेट बाहर फेंक आओ' तब वे कंधे उचकाते हैं! नहीं फेंकेगा कोई। मैं कहूँ कि ये मेरे जूते फेंक आओ, फिर भी नहीं फेंकते।

कप-प्लेट टूट गए, तो फिर आपको नौकर से क्या कहना चाहिए? वे टूट गए तो कौन सा ज्ञान हाज़िर हो जाएगा?

प्रश्नकर्ता : 'व्यवस्थित।'

दादाश्री : हाँ। लेकिन उसके सामने ऐसा मत कहना। नौकर से तो आपको ऐसा कहना चाहिए कि, 'भाई, तू जला तो नहीं न?' फिर आप ऐसा कहना कि 'धीरे-धीरे चलना।' और यदि उसे ऐसा कहोगे कि 'व्यवस्थित' है तो अगले दिन बच्चा गिर जाएगा तब भी वह कहेगा, 'व्यवस्थित'। वह बल्कि आपसे कहेगा। इसलिए आपको उससे कहना चाहिए कि, 'जल्दी-जल्दी क्यों चल रहा है, ज़रा धीरे चल।' उसे डाँटना मत। आपको अंदर समझना है कि सिर्फ उसे ज्ञान देने के लिए ही चेतावनी दे रहे हैं।

'व्यवस्थित' किसे कहते हैं? आप न टोकें, तो भी आप 'व्यवस्थित' समझे नहीं हैं। उसे ऐसा न कहना भी गुनाह है। उससे कहना चाहिए, 'भाई, तू ज़रा धीरे से लाया होता न, तो टूटता नहीं। तुझे क्या लगता है?' तब वह कहता है, 'हाँ, धीरे से चला होता तो टूटते नहीं।'

लोग तो यदि नौकर के हाथ से प्याले टूट जाते हैं तो अंदर अकुलाते रहते हैं। वे क्यों अकुलाते हैं? यह तो व्यवस्थित ने तोड़ा है, नौकर ने नहीं तोड़े। बेकार ही क्यों अकुलाता रहता है? व्यवस्थित के ज्ञान के बगैर, व्यक्ति बोले बिना नहीं रह सकता क्योंकि नौकर के हाथ से प्याले टूट गए इसलिए वह मालिक बोले बगैर रहता ही नहीं न! क्यों तोड़ दिए? 'तेरे हाथ टूटे हुए हैं या ऐसा है, वैसा है!' लेकिन अब प्याले फूट गए तो फोड़ने वाला कौन है, वह 'व्यवस्थित' का ज्ञान आपको दिया है इसलिए कुछ कहना ही नहीं है न! और फिर 'व्यवस्थित' ही हुआ है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, जो हुआ वह 'व्यवस्थित'।

दादाश्री : हाँ, अव्यवस्थित होता ही नहीं। अव्यवस्थित दिखता है, वह भी 'व्यवस्थित' है। 'अवस्थित' यानी चार्ज की हुई बैटरी। 'व्यवस्थित' यानी जो डिस्चार्ज होता है वह। इसलिए बात समझने की ही ज़रूरत है। आपका 'व्यवस्थित' के ज्ञान से चलता है या नहीं चलता? सब व्यवस्थित ही चलता है न?

प्रश्नकर्ता : बाकी व्यवस्थित चलता है, पर कभी-कभी दखल हो जाता है।

दादाश्री : हो जाता है, पर पता चल जाता है न कि यह भूल हुई?

प्रश्नकर्ता : हाँ, भूल हुई वह पता चल जाता है।

दादाश्री : कभी-कभी पतंग गुलाट खा जाती है, तब और कुछ नहीं तो आपको डोर खींच लेनी है। डोर आपके हाथ में है।

जगत् में एक अक्षर भी किसी को कुछ कहना नहीं। कहना, वह रोग है एक प्रकार का! कहने का हो न तो वह रोग सब से बड़ा है! सब अपना-अपना हिसाब लेकर आए हैं। यह दखल करने की ज़रूरत क्या है? एक अक्षर भी बोलना बंद कर देना। इसलिए तो हमने यह 'व्यवस्थित' का ज्ञान दिया है। आपने यह 'ज्ञान' लिया हो, और आपके यहाँ ऐसा हो जाए तो आप समझ जाओगे कि यह व्यवस्थित ने तोड़ा है। नौकर के प्रति आपके भाव नहीं बिगड़ेंगे और समझ जाओगे कि व्यवस्थित ने तोड़ा।

बाकी, जगत् पूरा ही व्यवस्थित है। लेकिन हमें भूल नहीं करनी है। व्यवस्थित यानी उसका अर्थ ऐसा नहीं लगा सकते कि, 'व्यवस्थित में फूटना होगा तो फूटेगा', ऐसा करके प्याला फेंक नहीं सकते। इस तरह फेंकते हैं क्या लोग? वहाँ क्यों ऐसा नहीं रखते कि 'व्यवस्थित' है? प्याले बचाने के सभी प्रयत्न करने के बावजूद भी यदि गिर जाए और फूट जाए तब फिर हम ऐसा कहते हैं न, कि 'व्यवस्थित' है!

अर्थात् यह व्यवस्थित शक्ति तोड़-फोड़ भी करती है और सप्लाई भी करती है। इसलिए आपको परेशान नहीं होना है।

व्यवहार में जागते हुए सोओ

जगत्-व्यवहार चलाने के लिए आपको कुछ भी नहीं करना होता। व्यवहार को व्यवस्थित चला ही लेता है, 'एक्ज़ेक्ट' चला ही लेता है। आप सो जाते हो तब भी अंदर खाना पचता है, तो क्या जगत् नहीं चलेगा? इसलिए हमने क्या कहा

है कि जागते हुए भी थोड़ा-बहुत सोना पड़ेगा। जागते हुए सोना यानी क्या कि आप जाग रहे हों और प्याला फूट जाए तो आप पर इतना ही असर होना चाहिए जितना कि आप सो रहे हों और प्याला फूट जाए। असर में फर्क नहीं होना चाहिए। आप सो रहे हों और प्याला फूट जाए तो कितने शांत रहते हो! जब जागते हुए फूट जाए तब बीच में कौन सा भूत घुस गया? वह अहंकार और ममता का भूत घुस गया। उस भूत को आप पहचानो तब फिर जागते हुए सो सकोगे यानी कि खुली आँखों से सोना तो कोई झंझट ही नहीं रहेगी न! और इसमें गलत क्या है?

ऐसा है, अब चंदूभाई को उनका काम नहीं निकालना है, अब तो हमें अपना काम निकाल लेना है। यानी वस्तुस्थिति में व्यवस्थित के साथ बहुत ही एडजस्ट कर लो। 'व्यवस्थित' पूरा व्यवहार चला ही लेता है। किसी भी तरह की अक्ल लगाने जैसा नहीं है। चाहे कैसा भी भोजन पेट में डालें लेकिन रात को सोने के बाद में कौन चलाता है? अंदर जो पित्त रस, पाचक रस वगैरह डालना है, वह सब 'व्यवस्थित' ही चलाता है। अब, जो अंदर का चलाता है वह बाहर नहीं चलाएगा? लेकिन यह तो बाहर जाग रहा है न इसीलिए दखल दिए बगैर रहता नहीं न! वही अगला जन्म तैयार करता है और उसी को कहते हैं अगले जन्म के लिए संसार खड़ा किया। और यों यदि सोया हुआ हो न, और उस समय पच्चीस प्याले फूट जाएँ तब भी कोई दिक्कत नहीं। फिर पत्नी क्या कहती हैं कि इनके जागने से पहले सारे टुकड़े बाहर फेंक दो, वर्ना जागने पर ये तुरंत दखल देंगे। यानी नींद में तो चला ही जाता है न, उसी तरह से अब खुली आँखों से सोओ। फिर व्यवहार कैसा होता है वह तो देखना। रात भर सोता है फिर भी दाढ़ी अपने आप उगती है या नहीं? और सुबह उठकर आँखों से देखते हो न? उठते ही कान से तुरंत सुनाई देता है न? तो यह सारा एडजस्टमेन्ट किसने किया? अत: अब ज़रा जाग्रत होने की ज़रूरत है। व्यवहार में पूछने पर ही जवाब देना। यों ही दखल करना ही नहीं है।

व्यवस्थित का अर्थ, कोई दोषी नहीं

यह सब जो बता रहे हैं, इसका लघुत्तम निकालते हो आप? यह सब जो बता रहे हैं इसका लघुत्तम निकाल लो, यह समझना है और जगत् में सबकुछ 'व्यवस्थित' है इसलिए किसी से ऐसा मत कहना कि, 'तूने गलत किया।' ऐसा तो कहना ही नहीं चाहिए, ऐसा सोचना भी नहीं चाहिए। कहने की तो बात ही कहाँ रही, बोलने से तो सामने वाले को बुरा लगेगा लेकिन ऐसा सोचना भी नहीं चाहिए। इसीलिए हम कहते हैं न 'व्यवस्थित' है।

'व्यवस्थित' शक्ति किसने बनाई? किसी ने नहीं बनाई। परीक्षा का 'रिज़ल्ट' (परिणाम) कौन देता है? हमारा ही लिखा हुआ है, उसी का यह 'रिज़ल्ट' आता है! एक्ज़ेक्ट 'व्यवस्थित' लगा न?

'व्यवस्थित' का अर्थ क्या है? कोई दोषित है ही नहीं! यदि आप 'व्यवस्थित' समझ जाओगे तो आपको कोई दोषित दिखाई ही नहीं देगा।

अधूरी अपेक्षा, वह भी व्यवस्थित

प्रश्नकर्ता : यह ज्ञान लिया है और फिर साधारण व्यवहार में अपेक्षाएँ (संसार की) रहा करती हैं, आध्यात्मिक दृष्टि से अपेक्षा। यह अपेक्षा क्या चीज़ है?

दादाश्री : सांसारिक अपेक्षाएँ तो पूरी हो

जाएँगी, जितनी अपेक्षाएँ हैं वे सब पूरी हो जाएँगी इसी जन्म में।

प्रश्नकर्ता : कोई व्यक्ति हो, व्यवहार में उस व्यक्ति से हमने अपेक्षा रखी कि यह व्यक्ति ऐसा करे, इस अनुसार बरते, और वह नहीं बरते तब उसे क्या कहेंगे?

दादाश्री : वह नहीं बरते तब भी व्यवस्थित और बरते तब भी व्यवस्थित।

प्रश्नकर्ता : उससे जो दुःख होता है, वह?

दादाश्री : वह तप है, वह दुःख नहीं है, ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप चौथा पाया है। मोक्ष में जाने के लिए चार पाये चाहिए। उनमें से चौथा पाया निकाल देना है क्या आपको? तीन पायों का ही पलंग रह जाएगा फिर!

प्रश्नकर्ता : लेकिन उससे दुःख होता है, तो उस दुःख को क्या समझें?

दादाश्री : वह तप है, वह दुःख नहीं है! अब आपको दुःख तो आते ही नहीं हैं। तप ही आते हैं। तप तो आने ही चाहिए न! उसे आंतरिक तप कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : ऐसे तो बहुत तप आते हैं।

दादाश्री : जितने ज़्यादा आएँगे न, तो समझना कि उतना ही साफ होने लगा है। इसलिए आने दो। अभी तो, आपको कहना चाहिए कि 'अभी तो आप कम आ रहे हो, सभी आओ न'!

प्रश्नकर्ता : बुलाते हैं...

दादाश्री : हाँ, बुलाओ, बुलाओ, दादा मिल गए हैं अब। 'आना हो तो आओ, घबराना मत', कहना। वे लोग चाहे घबरा जाएँ, लेकिन हमें नहीं घबराना है!

हमने जो 'व्यवस्थित' कहा है, वह एक्ज़ेक्ट देखकर कहा है इसलिए निश्चिंत रहने जैसा है। यह जितना डिसाइडेड है उतना ही होगा। कुछ भी अन्डिसाइडेड नहीं होने वाला। यह ज्ञान देने से पहले डिसाइड हो चुका है। इसलिए हमने इसे व्यवस्थित कहा है। इसलिए आप निर्भय हो जाओ। निर्भय होकर भी आप शुद्ध उपयोग में रहना। शुद्ध उपयोग में रहने का अर्थ है, 'मैं शुद्ध ही हूँ'।

सभी लट्टू व्यवस्थित के अधीन

प्रश्नकर्ता : पति का भय, भविष्य का भय, एडजस्टमेन्ट लेने नहीं देता। वहाँ पर 'हम उसे सुधारने वाले कौन?' वह याद नहीं रहता, और सामने वाले को चेतावनी के रूप में बोल देते हैं।

दादाश्री : अगर 'व्यवस्थित' का उपयोग करे, 'व्यवस्थित' फिट हो जाए तो कोई परेशानी आए ऐसा नहीं है। फिर कुछ पूछने जैसा ही नहीं रहेगा। पति आए तब थाली और पाटा रखकर कहना कि चलिए भोजन के लिए। उनकी प्रकृति बदलने वाली नहीं है। जिस प्रकृति को आप देखकर, पसंद करके, शादी करके आईं, उस प्रकृति को अंत तक देखना है। तब क्या पहले ही दिन नहीं जानती थीं कि यह प्रकृति ऐसी ही है? उसी दिन अलग हो जाना था न? इतना लंबा क्यों चलाया? इस किच-किच से संसार में कोई फायदा नहीं होता, नुकसान ही होता है। किच-किच यानी कलह, इसलिए भगवान ने उसे कषाय कहा है।

प्रश्नकर्ता : प्रकृति न सुधरे, पर व्यवहार तो सुधारना चाहिए न?

दादाश्री : व्यवहार तो लोगों को आता ही नहीं। व्यवहार कभी आ गया होता, अरे! आधा

घंटा भी आया होता तो बहुत हो गया! व्यवहार तो समझे ही नहीं हैं। व्यवहार यानी क्या? ऊपर-ऊपर का (सतही तौर पर)! व्यवहार यानी सत्य नहीं। यह तो व्यवहार को ही सत्य मान लिया है। व्यवहार में सत्य यानी 'रिलेटिव' सत्य। इसलिए यहाँ के नोट (रुपये) सच्चे हों या झूठे, दोनों 'वहाँ' के स्टेशन (मोक्ष का) पर काम नहीं आते। इसलिए छोड़ो इसे, और आप 'अपना' काम निकाल लो। व्यवहार यानी दिया हुआ वापस आए वह। अगर कोई कहे, कि 'भाई, आप में अक्ल नहीं है' तो हम जानें कि यह दिया हुआ ही वापस आया! अगर यह समझ लें तो उसी का नाम व्यवहार कहलाता है। अभी व्यवहार (की समझ) किसी के पास है ही नहीं। जिसका व्यवहार, व्यवहार है, उसका निश्चय, निश्चय है।

यह आपका उपाय ही हानिकारक है। यह उपाय नहीं है। यह तो एक प्रकार का इगोइज़म है। मैं इसे ऐसे सुधारूँ, वैसे सुधारूँ, यह इगोइज़म है। हम क्या कहना चाहते हैं कि 'पहले तू सुधर।' सिर्फ आप ही बिगड़े हुए हो, वे तो सुधरे हुए ही हैं!

हम तो इतना समझते हैं कि झगड़ने के बाद 'पत्नी' के साथ व्यवहार ही नहीं रखना हो तो अलग बात है, पर फिर से बोलना है तो फिर बीच की सारी भाषा गलत है। झगड़े हो रहे हों, तब लक्ष्य में रहना चाहिए कि ये कर्म नाच नचा रहे हैं। फिर उस 'नाच' का ज्ञानपूर्वक हल लाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादा, यह तो झगड़ा करने वाले दोनों व्यक्तियों को समझना चाहिए न?

दादाश्री : नहीं, यह तो 'सब अपना-अपना संभालो।' आप सुधरेंगे तो सामने वाला सुधरेगा। यह तो विचारणा है, कि एक घड़ी बाद साथ में बैठना है तो कलह क्यों? शादी की है तो कलह क्यों? आप बीते कल को भुला चुके होते हो और हमें तो सभी वस्तु 'ज्ञान' में हाज़िर होती हैं। यह अज्ञान से मानता है कि वह चढ़ बैठेगी। कोई हमें पूछे तो हम कहेंगे कि 'तू भी लट्टू और वह भी लट्टू तो किस तरह चढ़ बैठेगी? वह कोई उसके बस में है?' वह तो 'व्यवस्थित' (संयोगों) के बस में है।

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में रहना है तो 'एडजस्टमेन्ट' एकपक्षीय तो नहीं होना चाहिए न?

दादाश्री : व्यवहार तो उसे कहते हैं कि 'एडजस्ट' हो जाएँ। उसका व्यवहार सब से अच्छा माना जाता है। जिसके साथ रास नहीं आए, वहीं पर शक्ति विकसित करनी है, रास आए वहाँ तो शक्ति है ही। रास नहीं आए वह तो कमज़ोरी है। मुझे सब के साथ कैसे रास आ जाता है? जितने एडजस्टमेन्ट्स लेंगे उतनी शक्तियाँ बढ़ेंगी।

प्रश्नकर्ता : बहुत बार ऐसा होता है कि एक समय में दो लोगों के साथ एक ही बात पर 'एडजस्टमेन्ट' लेना होता है, तो एक ही समय में सभी ओर किस तरह पार पा सकते हैं?

दादाश्री : दोनों के साथ लिया जा सकता है। अरे, सात लोगों के साथ भी लेना हो, तब भी लिया जा सकता है। एक पूछे, 'मेरा क्या किया?' तब कहें, 'हाँ भाई, तेरे कहे अनुसार करूँगा। दूसरे को भी ऐसा कहेंगे, 'आप कहोगे वैसा करूँगा।' 'व्यवस्थित' के बाहर होने वाला नहीं है, इसलिए किसी भी तरह से झगड़ा खड़ा मत करना।' मुख्य वस्तु एडजस्टमेन्ट है। 'हाँ' से मुक्ति है। आपने 'हाँ' कहा फिर भी 'व्यवस्थित' के बाहर कुछ होने वाला है? लेकिन 'ना' कहा तो *महाउपाधि!*

व्यवस्थित को खुद पर लागू करना

अब, अच्छा खाना बना हो, अच्छा आम हो, फर्स्ट क्लास रस निकाला हो। वाइफ ने रस-रोटी बनाए हों, और जब टेबल पर खाने बैठे तब यदि कढ़ी में नमक ज़रा ज़्यादा हो न, तो कहेगा, 'कढ़ी ऐसी बनाई?' तब फिर वह साथ बिगाड़ देता है। अब, अगर पत्नी ने बनाई हो तो डाँटो। किसने बनाई?

प्रश्नकर्ता : व्यवस्थित ने।

दादाश्री : अपना ही, भोगने वाले के प्रारब्ध की वजह से ही है यह। इसीलिए आपको नहीं खाना हो तो मत खाना और बाकी सब खा लेना। बाद में पत्नी पूछे कि, 'आपने कहा नहीं कि कढ़ी में नमक ज़्यादा हो गया था!' तब आप कहना, 'आप खाओगी तो आपको पता नहीं चलेगा? आपको भी तो कुछ पता चले न! मुझे भला कहने की क्या ज़रूरत?'

यह जो शरीर धारण हुआ है, यह शरीर तो अपने लिए लेकर आया होगा न? हिसाब तो लेकर आया होगा न? दाढ़ी बढ़ाने की इच्छा नहीं हो फिर भी बढ़ती रहती है। तो क्या रोटी नहीं मिलेगी? घड़ी भर के लिए यदि प्रकृति रूठ जाए न, तो खुली आँखें होने पर भी लाइट बंद हो जाएगी बिल्कुल। ऐसा है यह जगत्। यदि यह लाइट चलती रहती है तो रोटी क्यों नहीं मिलेगी? इसलिए किसी भी चीज़ की फिक्र या चिंता नहीं करना। व्यवस्थित ऐसा है न, सबकुछ लेकर आया है आपका। इसलिए फिक्र-चिंता करने जैसा है ही नहीं।

फिर भी व्यवस्थित पर बैठे नहीं रहना है कभी भी। व्यवस्थित को आप पर बैठाना है, उस पर नहीं बैठना है। उस पर बैठोगे तो परेशानी हो जाएगी। व्यवस्थित को याद नहीं करना होता। जब खाने को नहीं मिले उस दिन वीतराग भगवान की बताई हुई आज्ञा, आराधना सहित का उपवास। ये तो जिस दिन मिलता है, उस दिन कहते हैं, 'आज मेरा उपवास है।' अगले दिन कोई ठिकाना नहीं पड़ता, तब कुछ खाना परोसा जाए तो कषाय करते रहते हैं, 'ऐसा कहाँ से माँग लाए? यह ठंडी रोटी और यह सब?' तो भाई कषाय करने हों तो उपवास मत करना और उपवास करने हों तो कषाय मत करना। कषाय करने के लिए उपवास नहीं करने हैं। कषाय निकालने के लिए उपवास करने हैं।

पहले सावधानी, फिर कहना 'व्यवस्थित'

एक बहन आकर कहती है कि यह लड़का मुझे बहुत गालियाँ देता है, कमाता तो कुछ है नहीं, नौकरी चली गई है। मैं खुद चार घंटे जाकर डेढ़ सौ डॉलर ले आती हूँ। मकान खुद का है। थोड़ा हिस्सा किराए पर दिया है, ऐसे गाड़ी चलती है। किराया ज़्यादा नहीं आता, पर यह डेढ़ सौ हैं, उसी के सहारे चलाते हैं। दिन भर क्लेश करके मुझे बहुत परेशान कर देता है। दादा, मैं क्या करूँ? यह इकलौता लड़का है अब! ऐसे सता-सताकर तेल निकाल देता है। तो मुझे कह दिया, यह अच्छा हुआ। फिर उस भाई को बुलाया। 'अरे, कमाता नहीं और ऊपर से दादागीरी करता है! दादागीरी आज से बंद कर दे। एक अक्षर भी बोलेगा?' तब वह कहता है, 'नहीं बोलूँगा। अभी से बंद।' फिर बहन से पूछा, तो उसने कहा, 'नहीं, एक अक्षर भी नहीं बोलता।'

हमारे यहाँ तो पुलिस डिपार्टमेन्ट, (दूसरे) सारे डिपार्टमेन्ट हैं। अकेला सिविल (डिपार्टमेन्ट) नहीं होता। अकेला सिविल नहीं चलता। अकेला सिविल चलता होगा क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं चलेगा।

दादाश्री : हमारे यहाँ तो पुलिस डिपार्टमेन्ट है। यानी सब उलटा-पुलटा करके आते हैं, उन सबको (कहना पडे)।

प्रश्नकर्ता : हमने लड़के को पढ़ने के लिए भेजा हो और वहाँ वह गलत तरीके से पैसे खर्च करता हो, ध्यान न रखता हो, फेल हो जाता हो, तो हम 'व्यवस्थित' ही समझें या कुछ करें?

दादाश्री : कुछ करना है, 'व्यवस्थित' नहीं समझना है।

प्रश्नकर्ता : यानी हम कहते हैं न कि सब व्यवस्थित है, तो उसे मान लेना है?

दादाश्री : ऐसा नहीं कह सकते न!

प्रश्नकर्ता : तो वहाँ क्या करना है?

दादाश्री : व्यवस्थित यानी आँखें मूँदकर चलना, इसका नाम व्यवस्थित नहीं। खुली आँखों से चलो और सावधानी से चलना है, फिर टकराए वह व्यवस्थित। व्यवस्थित का अर्थ समझो। खुली आँखों से चलो और सावधानी से चलो।

प्रश्नकर्ता : तो वहाँ लड़के के साथ क्या कदम उठाएँ?

दादाश्री : उसे समझाना है। और मारपीट तो करनी ही नहीं होती न!

सामने वाले को सुधारने के लिए हमारे प्रयत्न होने चाहिए, लेकिन जो प्रयत्न 'रिएक्शनरी' हों, वैसे प्रयत्नों में नहीं पड़ना चाहिए। हम उसे झिड़काएँ और उसे बुरा लगे तो, वह प्रयत्न नहीं कहलाएगा। प्रयत्न अंदर करने चाहिए, सूक्ष्म तौर पर। अगर हमें स्थूल तरीके से न आएँ तो सूक्ष्म तरीके से प्रयत्न करने चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यानी सुधारने के लिए भावना, प्रयत्न करने चाहिए क्या?

दादाश्री : प्रयत्न करने चाहिए, लेकिन प्रयत्न ऐसे नहीं होने चाहिए कि उसका नुकसान करे। उसे हेल्प हो ऐसे प्रयत्न करने चाहिए। वहाँ उस प्रयत्न में समता रखना बहुत मुश्किल है। वहाँ समता रखनी चाहिए।

हम तो सिर पर हाथ फेरकर कहते हैं कि, 'भाई, यह नहीं होना चाहिए'। प्रेम से कहते हैं, हमें उसके प्रति द्वेष नहीं होता और आपको उसके प्रति द्वेष रहता ही है कि, 'यह खराब है'। लेकिन उस द्वेष को निकाल कर करोगे तो काम होगा। द्वेष की उल्टी कर देनी चाहिए।

शांति के लिए 'हुआ सो व्यवस्थित' जान

यह ज्ञान ही सारा काम करता है, दूसरा कोई नहीं करता, ज्ञान ही काम करता है। ज्ञान ही जानने की ज़रूरत है। 'मैं कौन हूँ?' वह ज्ञान तो मिल गया लेकिन अगर इस व्यावहारिक ज्ञान के बारे में सब जानने को मिलेगा तो फिर किसी भी प्रकार का दखल नहीं रहेगा।

सारे संयोग इकट्ठे होकर बच्चा एक कार्य करता हो, वहाँ आप उस पर चिढ़ते रहें, उसे मारते रहें, तो इसका मीनिंग क्या है? क्योंकि पिछले अवतार में पुरुषार्थ किया हो, वह उलटा किया हो, उसकी वजह से यह परिणाम आया। उसे आप कह सकते हैं कि यह क्यों बिगाड़ा? नहीं, अभी भाव बिगड़े हों ऐसा किया हो, उसे ऐसा कहना चाहिए कि भाई, आप इसे बदल डालो। पर यह परिणाम कहीं बदलता है? आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं बदलता।

दादाश्री : इसलिए उसे बदलने जाते हैं,

पर कुछ सुधरता नहीं। इसलिए माँ-बाप को असंतोष होता रहता है। इसलिए इसका भेद समझकर फिर हल निकालना चाहिए। आप समझें कि वह भी संयोगों में है, आपके हाथ में कुछ नहीं है। सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स में आए, तो उसे फिर वैसा मान भी मत लेना। वह यदि मान लोगे तो उसी तरफ आपका मन हो जाएगा। मैं ऐसा नहीं कह रहा। आपको इस तरफ रहना है और उस तरफ का जानना है, दोनों करना है। समझ में आया न, या यों ही, हाँ में हाँ मिला रहे हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं, समझ में आता है।

दादाश्री : इगोइज़म तो होता ही है। या तो ज्ञान लिया हुआ हो, तो वह जीवित इगोइज़म नहीं होता। पर वह बेजान तो होता ही है न! उस अहंकार को तोड़ना तो नहीं चाहिए और उसे गलत एन्करेज भी नहीं करना चाहिए! क्योंकि कभी-कभार आप कच्चे पड़ जाओ, पर वह गलत है, और कुल मिलाकर ऐसा नहीं होना चाहिए न! इसलिए आपको बच्चों को संभालना है। ये दो ही हैं न! दूसरे तो पराए होते हैं। उनकी ज़िम्मेदारी पराए की। आप तो खिलाते-पिलाते हैं, इन दो की ज़िम्मेदारी आपकी। अब इनका न संभालें तो मैं भी आपको कहूँगा, और लोग भी कहने आएँगे कि ये बच्चों को संभालते नहीं। जिसका आपसे लेना-देना हो, उनकी यह झंझट होती है।

यह बात आपके लिए बहुत हेल्पफुल हो जाएगी। आप एक ही बात करते हैं, यह सुधरना चाहिए, सुधरना चाहिए। अरे, लोग सुधरते नहीं। ऐसे सुधारे जाते होंगे? मैं सब को काँच की तरह संभालता हूँ। क्योंकि आप तो ऐसी भूल-चूक कर दो, पर मुझसे भूल-चूक कैसे हो? आपको संभालता होऊँगा कि नहीं संभालता होऊँगा? आपको संभालूँ कि न संभालूँ? संभालूँ। लड़का फँसा हुआ है, उसके संयोग बिल्कुल ऐसे कसे हुए हैं। इसलिए उसे समझाकर कहना है। ऐसे-वैसे उसके भाव हैं, उन्हें बदलते रहना है।

वर्ना हम उसे क्या कहेंगे, कि तू यह छोड़ दे, छोड़ दे! तो बहुत कहें न, फिर वह मन में क्या कहता है? मुँह से कहता है, 'हाँ, छोड़ दूँगा।' पर अंदर कहता है, 'मैं और ज़्यादा करूँगा।' लो! बहुत छेड़-छेड़ करें तो क्या होगा? बोलते क्यों नहीं?

प्रश्नकर्ता : ज़्यादा करता है।

दादाश्री : हाँ, उस हद को मत चूको। उनमें भी इगोइज़म होता है। वे क्या इगोइज़म के बिना रह सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो सामने वाले का इगोइज़म तोड़ें, उस घड़ी वह अपने आपको सट्टे में डाल देता है। बच्चों का अहंकार जाग जाए, उसके बाद उन्हें कुछ कहा नहीं जा सकता। 'जो होना होगा वह होगा, पर करूँगा ही,' कहेगा। ऐसा मत करो। उसे संभालो, उसके इगोइज़म को संभालो। मैं काँच की तरह संभालता हूँ।

इसमें आप क्यों कलह करते हो? और अगर आप नहीं होते तो क्या होता? 'व्यवस्थित' के ताबे में है और आप बिना काम के दखल करते हैं।

व्यवस्थित से खत्म होते हैं बैर

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में अभी किसी के लिए ज़रा ऐसा कुछ बैर भाव भी हो जाता है लेकिन तुरंत ही व्यवस्थित और समभाव से फाइलों

का *निकाल* याद आ जाता है। इसलिए वह तुरंत ही खत्म हो जाता है।

दादाश्री : वह ठीक है।

प्रश्नकर्ता : यह जो समकित प्राप्त हुआ है इसमें कुछ इधर-उधर नहीं हो जाएगा न? ऐसा प्रश्न होता है, फिर भी अंदर ऐसी शंका नहीं है कि इधर-उधर हो जाएगा।

दादाश्री : यह तो, चेहरा भी बिगड़ जाता है लेकिन वह खुद जानता है कि चेहरा बिगड़ गया।

प्रश्नकर्ता : पहले जो परिणाम चार दिन तक होते रहते थे, उन्हें अब व्यवस्थित के ताबे में सौंप दिया है। समभाव से फाइल का *निकाल* करना है इसलिए एक-दो मिनट के लिए वैसा रहता है लेकिन तुरंत ही फिर शांत हो जाता है।

दादाश्री : यह व्यवस्थित ही है एक्ज़ेक्ट। मन-वचन-काया के जो भी कोई परिणाम आते हैं, तो वह व्यवस्थित है उन्हें सिर्फ देखना है।

प्रश्नकर्ता : यानी यह जो व्यवस्थित की दृष्टि है इसलिए खुद के मन-वचन-काया चाहे जो करें, वहाँ पर व्यवस्थित की जागृति में रहना है और सामने वाले के मन-वचन-काया चाहे जो करें, वहाँ पर भी उसी जागृति में रहना है। ऐसा ही है न?

दादाश्री : *पुद्गल, पुद्गल* का करता है, आत्मा को (उसे) देखते रहना है।

व्यवस्थित समझते ही दो नुकसान नहीं उठाना है

इकलौता बेटा मर जाए, तब भी वह 'व्यवस्थित' ही होता है, लेकिन यह तो अपने लोभ के कारण, अपने स्वार्थ के कारण रोता है। अत: उसे अव्यवस्थित मानता है। जेब कट जाए, वह भी 'व्यवस्थित' ही है, लेकिन फिर स्वार्थ के कारण, लोभ के कारण शोर मचाता है, नहीं तो रोने-धोने से कहीं वापस आएगा क्या? क्यों? छ: महीनों तक रोता रहे तो?

प्रश्नकर्ता : तब भी नहीं आएगा।

दादाश्री : फिर भी लोगों को कल्पांत करते हुए देखा है न? इसे कल्पांत क्यों कहते होंगे? एक पूरे 'कल्प' के अंत तक भटकना पड़ेगा! रोते हैं, सिर फोड़ते हैं उसके बाद कहेंगे, 'डॉक्टर को बुलाकर लाओ।' तब हम कहते हैं, फिर से डॉक्टर न बुलवाना हो तो फोड़ना, वर्ना अभी रहने दो न?

प्रश्नकर्ता : इतने अधिक साल बिगड़ जाते हैं, ऐसी समझ नहीं है।

दादाश्री : उनको भान ही नहीं है न? इसलिए हमने पुस्तकों में यह सब लिखा है कि तुम्हें 'कल्प' के अंत तक भटकना पड़ेगा। उसे 'कल्पांत' कहते हैं। कल्पांत का अर्थ और किसी ने किया ही नहीं है न? आपने आज पहली बार सुना न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, पहली बार सुना।

दादाश्री : अत: इस 'कल्प' के अंत तक भटकना पड़ता है और लोग क्या करते हैं? बहुत कल्पांत करते हैं। अरे भाई, कल्पांत का अर्थ पूछ तो सही कि कल्पांत यानी क्या? कल्पांत तो कोई ही मनुष्य करता है। कल्पांत तो किसी का इकलौता बेटा हो, उसकी अचानक मृत्यु हो जाए उस स्थिति में कल्पांत हो सकता है।

भगवान कहते हैं कि चिंता करने वाले के लिए दो दंड हैं और चिंता नहीं करने वाले

के लिए एक ही दंड है। अठारह वर्ष का इकलौता जवान बेटा मर जाए तो उसके बाद जितनी चिंता करते हैं, जितना दु:ख मनाते हैं, सिर फोड़ते हैं, और जो कुछ भी करते हैं, उनको दो दंड हैं और जो ये सब नहीं करते, उनके लिए एक ही दंड है। बेटा मर गया, उतना ही दंड है और सिर फोड़ा, वह अतिरिक्त दंड है। हम ऐसे दो तरह के दंड में कभी भी नहीं आते। इसलिए मैंने इन लोगों से कहा है कि, ''पाँच हज़ार रुपये की जेब कट जाए तब 'व्यवस्थित' कहकर आगे निकल जाना और चैन से घर चले जाना।''

यह एक दंड तो अपना खुद का ही हिसाब है। इसलिए घबराने का कोई कारण नहीं है। इसलिए मैंने 'व्यवस्थित' कहा है, एक्ज़ेक्ट 'व्यवस्थित' है। इसलिए, जो हो चुका है उसे तो ठीक है, करेक्ट है, ऐसा ही कहना। इकलौता बेटा मर गया तो करेक्ट है, ऐसा किसी से नहीं कह सकते। वहाँ तो ऐसा ही कहना पड़ेगा कि, बहुत बुरा हो गया। दिखावा करना पड़ेगा। ड्रामेटिक करना पड़ेगा। बाकी अंदर तो करेक्ट ही है, ऐसा करके चलना।

हमारे एक जान-पहचान वाले भाई की वाइफ पाँच बेटियाँ छोड़कर गुज़र गईं, तब मैं वहाँ मिलने गया था। तब एक डॉक्टर के मन में हुआ कि ये भले आदमी अभी टूट जाएँगे। तब वे खुद बोले, 'नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। मैं दादा के ज्ञान में रहा!' पत्नी के ऑफ हो जाते ही तुरंत 'व्यवस्थित' समझकर कम्प्लीट क्लियर! पाँच छोटी-छोटी बेटियाँ छोड़कर मर जाए तब क्या होगा? हाँ, पर फिर करना क्या है? सिर फोड़ें, तो क्या फिर आने वाली हैं? हमारा 'विज्ञान' क्या कहता है? 'व्यवस्थित' हो गया। दो नुकसान अज्ञानी उठाता है। एक तो गया सो गया, और ऊपर से सिर फोड़े और परेशानी करे। हमें तो सिर्फ गया उतना ही, ललाट पर लिखा नुकसान जितना गया, उतना ही गया। दो नहीं न? ललाट पर लिखा नुकसान तो छोड़ता नहीं न! तो वे दो नुकसान नहीं उठाते न? एक भी दिन नहीं? उसी का नाम विज्ञान कहलाता है।

एक लिखने के बाद ही शून्य लगते हैं...

प्रश्नकर्ता : आप बता रहे हैं कि व्यवस्थित का उपयोग आप किस प्रकार से करते हैं? जब वह घटना घटित होती है उस समय यही समझ लेना है कि जो हुआ है वह सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स के इकट्ठे होने से हुआ है?

दादाश्री : अपने घर से जाते समय सातों लोग जीवित थे और जब आए तब गुंडों ने उन्हें मार दिया था, तो अपने अंदर कोई भी बदलाव नहीं। यह व्यवस्थित है। हम शुद्धात्मा हैं! यह तो हिसाब थे जो चुका दिए। अब उसके पीछे रोना-धोना करोगे तो वे कहीं ठीक तो हो नहीं जाने वाले। यह तो चीखने-चिल्लाने से आपका गला बैठ जाएगा इतना ही है। ऐसा सब देखा है ज्ञानियों ने! ज्ञानियों के हिसाब से चलो न!

एक लिखेंगे तभी आगे की संख्याओं में पड़ेंगे न!

प्रश्नकर्ता : ओहोहो! बहुत बड़ी बात है!

दादाश्री : एक लिखेंगे तभी आगे की संख्याओं में पड़ेंगे न! एक ही नहीं लिखेंगे न, तो शून्य-शून्य! संख्याओं में पड़ेंगे तभी घोटाला होगा न!

ये सारे घोटाले संख्याओं में पड़ने की वजह से हैं। अब जो जिस जगह पर घुसना नहीं चाहता

न, उसे समाधान हो जाता है और जिसे वहम है कि संख्याओं में पड़ने जैसा है, उसके लिए कोर्ट हैं। वह कोर्ट में भी जा सकता है और जाने की छूट है। व्यवस्थित क्या कहता है कि 'तू कोर्ट में भी जा, कोर्ट जाने में हर्ज नहीं है।' किसी भी चीज़ में ऐसा करोगे न तो कोर्ट में जाना पड़ेगा। अंदर ही अंदर यदि शून्य नहीं कर सकते तो कोर्ट में जाना पड़ेगा। तब कोर्ट में भी उसके साथ 'आओ, चाय-वाय पीएँ', ऐसे राग-द्वेष रहित करो। आत्मा होकर कोर्ट में जाओ। क्योंकि हिसाब है। कोर्ट का यह आयोजन आपने आज नहीं किया है। पहले अज्ञान दशा में योजना बनाई थी इसीलिए इसे देखना है। अज्ञान दशा में नियोजित की हुई चीज़ों को 'देखना' है।

ज्ञानी तो वहीं पर उसे शून्य कर देते हैं। सातों लोगों को काट दिया हो न, तो देखते ही शून्य कर देते हैं। पड़ोसी कहेंगे, 'दादा, आपको बहुत परेशानी हो रही होगी न इन सब से?' तब कहते हैं, 'हाँ बहुत ही, लेकिन क्या हो सकता है?' समझा-बुझाकर बात करेंगे। पड़ोसियों से यदि ऐसा कहेंगे न, कि, 'हमें कुछ भी नहीं होता और ऐसा सब है', तो फिर सब पड़ोसी अंदर ही अंदर हँसी उड़ाएँगे। उसके बजाय, 'भाई, क्या हो सकता है, हमें बहुत दुःख हो रहा है!' इस तरह बहला कर काम हो सकता है।

प्रश्नकर्ता : किसी भी चीज़ की शुरुआत की होगी तभी पूरा लंगर आता है न! एक लिखने के बाद ही तो फिर बाकी के नंबर आते हैं!

दादाश्री : इसलिए अब फिर से इसमें एक नहीं लिखना है, ऐसा कहना चाहते थे। अब, पहले जो नंबर लिख लिए हैं वे तो लिख लिए लेकिन अब शून्य करते रहना है।

कोई (किसी को) मार दे और हम देखें तो अपनी तरफ से एक नहीं लिखना चाहिए। शून्य कर देना। आपको समझ में आया?

प्रश्नकर्ता : यानी यदि पहले शुरुआत की होगी, एक लिखा होगा तभी आगे शून्य लगेंगे?

दादाश्री : ऐसा नहीं। हम घर पहुँचें और वहाँ घर के सभी लोगों को गुंडों ने मार दिया हो, और यह ज्ञान तो अपने पास है ही, तब हमें वहाँ पर क्या-क्या करना चाहिए? एक लिखेंगे यानी कि ये पौद्गलिक विचार करेंगे तभी उसके आगे दूसरे शून्य लगेंगे न! अगर एक ही नहीं लिखें तो? ऐसा है अपना विज्ञान। उस समय तो वह अपना सबकुछ भूल जाता है, आत्मा-वात्मा सब, पिछला याद आता है और रोता रहता है। सभी लोग एक लिख देते हैं। ऐसा नहीं करना चाहिए। इसलिए सचेत कर देता हूँ। चाहे कैसे भी संयोग आएँ लेकिन किसलिए?

प्रश्नकर्ता : सात व्यक्ति घर पर हों और शाम को वापस आएँ तो छः मर जाएँ...

दादाश्री : छः क्या, एक भी न रहे। अपना ज्ञान तो क्या कहता है कि, 'भाई, यह तो व्यवस्थित है।' व्यवस्थित पूरा एक्ज़ेक्ट है। अपना यह ज्ञान सबकुछ साफ-साफ ही बताता है न! जो देखा, जो स्थिति घर पर आकर देखी, वह व्यवस्थित ही है या नहीं? या अव्यवस्थित है?

प्रश्नकर्ता : है तो व्यवस्थित ही!

दादाश्री : तो फिर व्यवस्थित को अव्यवस्थित क्यों करते हो? तो फिर उसे अव्यवस्थित करने का कारण क्या है? एक लिखे जाने का कारण ही क्या है? फिर हम जो देखते हैं, वह व्यवस्थित ही है। हाँ, यदि कोई मार रहा हो तब आपको बीच में पड़ना चाहिए, और वह तो *पुद्गल* पड़ता है, आपको कहना है कि,

'चंदूभाई, देखो यह...' आपको हर एक चीज़ का ज्ञाता-द्रष्टा रहना है।

प्रश्नकर्ता : जो अव्यवस्थित हो गया, वह भी व्यवस्थित ही है?

दादाश्री : जो अव्यवस्थित दिखाई देता है वह भी व्यवस्थित ही है। अव्यवस्थित दिखाई देता है बुद्धि की आँखों से, और ज्ञान से व्यवस्थित दिखाई देता है। बुद्धि की आँखों से सबकुछ अव्यवस्थित ही दिखाई देता है न, औरों के दोष ही दिखाई देते हैं न!

हो जाने के बाद 'व्यवस्थित' कहलाता

अपना कोई रिश्तेदार बीमार हो, नज़दीकी रिश्तेदार और फिर कोई ब्राह्मण कहे कि, 'इनके ग्रह अच्छे नहीं हैं। लगता नहीं है कि ये जीएँगे।' ऐसी बात आपने सुनी हो और फिर दादा का व्यवस्थित याद आ जाए कि 'अब व्यवस्थित में जो होगा वही होगा।' तो फिर अपनी तरफ से इलाज बंद हो जाएगा, अपने हाथ कमज़ोर पड़ जाएँगे। इस तरह व्यवस्थित का दुरुपयोग करेंगे तो इलाज करने का अपना जो उल्लास था वह खत्म हो जाएगा और रात को (उनके पास) बैठना भी बंद हो जाएगा। इसे भयंकर गुनाह कहा जाएगा। आपको तो अंत तक, 'ये जीएँगे', ऐसा मानकर अंत तक दवाई और सारे उपचार वगैरह करने हैं। अंदर भय लगने लगे तो कहना, 'व्यवस्थित में जो होगा वह होगा। लेकिन भयभीत होने की ज़रूरत नहीं है।' व्यवस्थित कब कहा जा सकता है? उनका देहांत हो जाए तब। तब फिर आप कहना, व्यवस्थित है। देहांत होते ही कह देना, 'व्यवस्थित'। 'यह किसने किया?' तो कहना, 'व्यवस्थित' ने।

कोई भी चीज़ जब भूतकाल हो जाए तब व्यवस्थित ही कहना चाहिए। लेकिन 'जो होना है' उसे व्यवस्थित नहीं कहना चाहिए, होने के बाद में कहो। और अगर भय लगता हो तो निश्चित करना चाहिए कि, 'व्यवस्थित है, लेकिन मुझे तो सतर्क रहना है। मेरे भयभीत होने का कोई कारण नहीं है। मुझे तो सतर्कता से ही चलना है।' इतना ही समझने की ज़रूरत है क्योंकि वैज्ञानिक है यह तरीका। गप्प लगाने से नहीं चलेगा, सैद्धांतिक होना चाहिए। कभी भी न टूटे ऐसा होना चाहिए। किसी की मृत्यु हो जाए तो, 'जो होने योग्य था वह हो गया। अब इसमें किसी का कोई दोष नहीं है।' डॉक्टर के हाथों मृत्यु हो जाए तो डॉक्टर का दोष नहीं है। लोग तो गलत आरोप लगाते हैं, दावा दायर करते हैं। यह भी कोई तरीका है? ये सब तो निमित्त हैं!

प्रश्नकर्ता : हमें 'व्यवस्थित' का अवलंबन कब लेना चाहिए?

दादाश्री : जेब कटने के बाद, क्योंकि 'व्यवस्थित' का सीधा अवलंबन कौन लेता है? जिसे संपूर्ण ज्ञान हो वही लेता है। बाकी लोग तो ज़रा गड़बड़ कर देते हैं, 'व्यवस्थित' का दुरुपयोग कर देते हैं। अत: काम हो जाने के बाद 'कम्प्लीट व्यवस्थित' कहना है और भविष्य का विचार आए तब फिर कह देना कि 'व्यवस्थित' है।

अतिथि का स्वागत करो, साफ़ मन से

मुझे यह ज्ञान नहीं हुआ था तब भी, मैं व्यवस्थित का ज्ञान लेकर आया था कि यह जगत् व्यवस्थित है। यानी घर पर जो मेहमान आए हैं वह व्यवस्थित ही है तो फिर उनका तिरस्कार क्यों करना चाहिए? इतना था कि कभी भी मैं बाहर किसी से ऐसा नहीं कहता था कि, 'आप

कहाँ ठहरे हुए हैं, मेरे घर क्यों नहीं आए?' लेकिन यदि घर आ गए तो वे अतिथि। खींचकर नहीं लाना है किसी को। व्यवस्थित को व्यवस्थित ही रहने देना है।

प्रश्नकर्ता : हम लोग तो 'अतिथि देवो भव:' ऐसा कहते हैं न?

दादाश्री : हाँ! तिथि तय किए बिना, चिट्ठी-विट्ठी लिखे बिना जो आएँ, वे अतिथि। उस समय यदि अपनी परिणति अच्छी रही तो उसे जागृति कहेंगे, वह पुरुषार्थ कहलाएगा। तब फिर मोक्ष के लिए सर्टिफाइड होने की तैयारी हो गई। कसौटी पर खरा तो उतरना पड़ेगा न?

प्रश्नकर्ता : ठीक है। लेकिन दादा! वे जो आए, वे भी भगवान ही हैं न?

दादाश्री : वह तो अब पता चला कि 'भगवान हैं'। (उन) भगवान के लिए मन बिगाड़ने में हर्ज नहीं है क्योंकि उन्हें बुलाने वाले तो लाखों लोग हैं लेकिन इन्हें (मेहमान) बुलाने वाला तो कोई नहीं है इसीलिए अपने यहाँ पर भाव नहीं बिगाड़ना चाहिए। हम कौन लोग हैं! कैसा अपना व्यवहार है! निश्चय न हो तो ठीक है लेकिन व्यवहार तो उच्च होना चाहिए न! यही सब से बड़ा तप है। वे जो मेहमान आए थे, वह व्यवस्थित। वे रहे, वह भी व्यवस्थित और गए, वह भी व्यवस्थित। तब क्या फिर उल्टा विचार आएगा? आएगा ही नहीं। फिर वे जो कुछ भी खाते हैं, वह उनके हक़ का ही खाते हैं तो फिर उनके लिए उल्टा विचार ही नहीं आएगा और प्रेम से खाना खाकर जाएँगे।

घर आ गए, वह तो व्यवस्थित है ही। यह व्यवस्थित का ज्ञान आपको निश्चिंत बना दे, ऐसा है।

अब, व्यवस्थित के अधीन आए हैं। पाँच-सात दिनों तक नहीं जाएँ तो मन में भाव बिगाड़ देता है कि, 'अरे, ये कहाँ से आ गए हैं? ये लोग यहाँ से जाएँ तो अच्छा।' इसे भाव बिगड़ना कहते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए। व्यवस्थित के अधीन आए हैं और व्यवस्थित के अधीन जाएँगे। अपने हाथ में है क्या कुछ भी? वे अपने आप नहीं आए हैं, उनमें शक्ति नहीं है बेचारों में, उन पर क्यों चिढ़ते हो? यह व्यवस्थित का ज्ञान ऐसा है कि रौद्रध्यान-आर्तध्यान दोनों बंद करवा दे। यह व्यवस्थित का ज्ञान तो बहुत हेल्पिंग है। इसकी वजह से तो चैन रहा करता है और एक्ज़ेक्ट व्यवस्थित है।

प्रश्नकर्ता : व्यवस्थित समझ आ जाए तो आधा काम खत्म हो जाएगा।

दादाश्री : पूरा ही काम खत्म हो जाता है। व्यवस्थित पूरा रखा है। जिन्हें व्यवस्थित का ज्ञान रहता है उन्हें आत्मा दिया है।

घर में कोई नापसंद व्यक्ति आ जाए और वह जाए नहीं तब अंदर नापसंदगी रहा करती है। नहीं? अब नहीं रहता ऐसा? अब जो आ गया वह व्यवस्थित। और अपने निकालने से जाएगा नहीं, तो फिर हमें यह देखते रहना है कि व्यवस्थित क्या करता है।

प्रश्नकर्ता : फिर भी कभी ऐसे भाव आ जाते हैं लेकिन हमें पता चलता है।

दादाश्री : वैसे भाव आ जाते हैं, वह पता चलता है। भाव तो आएँगे। भाव तो अवश्य आएँगे, अंदर हैं इसलिए। जितने भाव भरे हुए हैं उनकी *निर्जरा* तो होनी ही है न। *निर्जरा* हो गई कब कहा जाएगा? वे *संवर* हों, उस समय फिर से तन्मयाकार न हो जाए। *संवर* रहेगा तो बस हो

गया। उस तरफ *निर्जरा* हुई और इस तरफ *संवर* हुआ। *निर्जरा* तो अवश्य होनी ही चाहिए। अंदर है तो *निर्जरा* होनी ही है। नापसंद मेहमान आए तभी से लोगों को बुरा लगता है। नापसंद मेहमान हो या नापसंद व्यक्ति आ जाए तो मन में ऐसा लगता रहता है कि यह कब जाए, कब जाए, कब जाए? लेकिन मेहमान बेचारा खुद भी नहीं जानता कि मेरे लिए ऐसा सोचते रहते हैं। लेकिन अपनी आँखों पर से समझ जाता है कि, 'मैं इन्हें पसंद नहीं हूँ।' इसे भगवान ने आर्तध्यान कहा है। आर्तध्यान कब? जब अपना वर्तन ऐसा हो कि उसे दु:ख न हो तब, यदि दु:खदायी वर्तन हो जाए तो साथ में रौद्रध्यान भी हो गया।

पसंदीदा आ जाए तो, 'नहीं, दो दिन बाद जाना। अभी मत जाइए, मत जाइए', कहते हैं फिर भी व्यवस्थित उसे ले जाता है और आँखों से आँसू टपकते रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ज्ञान से तो फर्क आ गया है।

दादाश्री : बहुत फर्क आ जाता है। ज्ञान से फर्क नहीं आए तो वह ज्ञान, ज्ञान नहीं है। ज्ञान तो उसी को कहते हैं कि एक घंटे में ही फर्क आ जाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : अभी ही एक घटना घटी है। मेरे रिलेटिव हैं, अच्छा कमाते हैं। उन्हें नौकरी मिली है फिर भी हमारे घर आकर रह रहे हैं तो अब, भाव बिगड़ गया कि अब उन्हें अपना घर ढूँढ लेना चाहिए। डेढ़ महीना हो गया और ऐसा लगता है कि जैसे मेरे ही घर में रहेंगे।

दादाश्री : वे भाई समझते नहीं हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं। उसे मुफ्त में रहना और खाना मिलेगा तो वह भाई नहीं जाएगा।

दादाश्री : आप जैसा मानते हो वैसा कुछ नहीं है। ये सिर्फ आपके हिसाब हैं। आपके बोलने से चले जाएँ ऐसे हैं तो आप धीरे से कहना कि, 'आपकी तनख्वाह तो अच्छी है, जगह-वगह ढूँढ लेते हैं आपके लिए।' तब वे कहें, 'ढूँढ निकालिए।' तो उसका हल आ जाएगा। उन्हें ऐसा तो कह ही नहीं सकते न, कि, 'आप जाओ। हमारे यहाँ से चले जाओ।' क्योंकि व्यवस्थित का नियम है कि कोई नहीं कहे तब भी वे चले ही जाएँगे। चलेगा ही नहीं न किसी का भी। यहाँ पर लोगों को जीना है फिर भी जाना पड़ेगा न?

प्रश्नकर्ता : लेकिन इस तरह से भाव बिगड़ जाता है मेरा।

दादाश्री : भाव तो बिगड़ ही जाएगा न। वह बुद्धि है न, कि यह इतना कमा रहा है और ऐसा सब है, बुद्धि तौलती है न! यहीं पर ज्ञान देखना है न!

प्रश्नकर्ता : भाव बिगड़ा न, कि उन्हें खुद का घर ढूँढ लेना चाहिए तब अंदर तो लगा कि गलत हो रहा है। तो उसी मोमेन्ट पर प्रतिक्रमण हो गया।

दादाश्री : उन्हें घर ढूँढ लेना चाहिए, वह चीज़ न्याय है लेकिन न्याय और कर्म का उदय दोनों साथ में नहीं हो सकते। न्याय को तो हमें जानना है। किसी के यहाँ गए हों तो यह न्याय आपके काम आएगा कि आपको दूसरा घर ढूँढ लेना चाहिए। लेकिन वह तो उसके अपने न्याय के अनुसार चलेगा न, उसे जो न्याय समझ में आया है उस अनुसार! इसलिए आप समझकर कहना, इस तरह से समझकर। आप अंदर ऐसा कहना कि, 'चंदूभाई, ज़रा धीरे से, उसे दु:ख न हो उस तरह से बातचीत करना।' बाकी, यदि धीरज रह सके तो चला लेना पड़ेगा। इसी को

तप कहते हैं न! तप नहीं हो सके तो फिर करने को भी क्या हैं?

प्रश्नकर्ता : लेकिन हमें ऐसा लगता है कि किसी को ज़रूरत हो, कोई इन्डिया से आया हो, नौकरी-व्यापार नहीं हो, तो अपने यहाँ छः-बारह महीने रहे तो भी हर्ज नहीं है लेकिन जिसके पास इतना सब है उसे तो अपना ढूँढ ही लेना चाहिए।

दादाश्री : बुद्धि उछल-कूद करती है। आपको उसे ऐसा नहीं कहना है कि, 'जाओ।' उसके पास कुछ है नहीं, इसलिए रह रहा है। यदि आपसे सहन हो सके तो नहीं कहना। सहन नहीं हो सके तब तो कह देना। बाकी, अपनी यह बुद्धि उछल-कूद मचाती है। वह नियम भंग नहीं कर रहा है, आप भंग कर रहे हो नियम का। वह तो किसी नियम के आधार पर रह रहा है, व्यवस्थित के।

व्यवस्थित चलाए शुद्ध व्यवहार

जो व्यवस्थित हो रहा हो उसे हमें अव्यवस्थित नहीं करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में अभी भी कभी-कभी ऐसा हो जाता है तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : शाम को चंदूभाई को थोड़ा *ठपका* (डाँटना, टोकना) देना, ऐसा एकाध महीना *ठपका* देंगे तो बंद हो जाएगा।

ऐसा है, कि व्यवहार में व्यवस्थित से बाहर कुछ होता ही नहीं। व्यवहार को जितना बदलने जाता है न, अंदर उतना ही भरा हुआ अहंकार है। इसलिए हमें इतना समझ लेना है कि यह व्यवस्थित है, इसे हमें अव्यवस्थित करके क्या करना है? इसके बावजूद भी अगर कुछ बोल देते हो तो वह पहले का भरा हुआ माल है। क्योंकि अपना यह अक्रम है न, तो कर्म खपाए बिना आए हैं इसलिए भरा हुआ माल निकलेगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन कभी जान-बूझकर कहना पड़ता है इसलिए बता रहा हूँ।

दादाश्री : नहीं, कहने के लिए तो इस जगत् में कुछ है ही नहीं। वह पूछे तो कहने जैसा है। वह पूछे कि इसका क्या करना है? तब आपको कहना चाहिए। बाकी, मन में तो ऐसी ही इच्छा रखनी चाहिए कि यह नहीं पूछे तो अच्छा। जबकि लोग तो बिना पूछे ही माल देते रहते हैं। ग्राहक मना करे और हम माल देते रहें तो ग्राहक को अकुलाहट नहीं होगी? फिर ग्राहक हमारे सिर पर ही मारेगा न! लेकिन वह पूछे तो जवाब देना पड़ेगा। हम से कोई पूछने आए तो हमें लगता है, 'भला, यह परेशानी कहाँ से आ गई?' धर्म की बात पूछने के लिए आए तो ठीक है लेकिन व्यवहार की बात पूछने आए तब तो परेशानी जैसा लगता है। लेकिन हम व्यवहार में कुछ बोलते नहीं हैं! नमक ज़्यादा डल गया हो फिर भी हम क्यों बोलें? बोलेंगे तो झंझट होगी न?

व्यवहार तो, व्यवस्थित जिस अनुसार चलाता है वह शुद्ध व्यवहार है और उसमें यदि 'आप' दखल दोगे तो वह अशुद्ध हो जाएगा, दखल नहीं देना है और दखल दे देते हो तो कर्म नहीं खपे हैं इसलिए हो जाता है। तो शाम को आपको पंद्रह मिनट बैठकर चंदूभाई को *ठपका* देना चाहिए। आपको कहना चाहिए कि, 'उस समय आपने बेवजह बच्चे के साथ माथापच्ची की थी। पत्नी के साथ माथापच्ची की। यह गलत किया, ऐसा नहीं करना चाहिए, ऐसा करना चाहिए?' उसे *ठपका* देना। एक महीने तक *ठपका* दोगे न, तो चंदूभाई का यह सब बंद हो जाएगा। चंदूभाई भी समझदार हैं लेकिन उन्हें *ठपका* देने वाले की

ज़रूरत है, कोई डाँटने वाला तो होना चाहिए न! इसलिए आपको *ठपका* देना है। वर्ना उल्टा मानकर उल्टा चलता रहेगा, और चंदूभाई का उल्टा चला तो आपका भी उल्टा चलेगा।

पूना जाने के बजाय चंदूभाई अहमदाबाद की गाड़ी में बैठ जाए तो फिर आपको अहमदाबाद जाना पड़ेगा न? इसलिए आपको ऐसा करते रहना है ताकि चंदूभाई सीधे चलें, तो चंदूभाई मुक्त हो जाएँगे और आप भी मुक्त हो जाओगे।

प्रश्नकर्ता : हम समझते हैं कि यह अहंकार है, फिर भी वह चढ़ बैठता है।

दादाश्री : चढ़ बैठता है, उसमें हर्ज नहीं है। चढ़ बैठता है, वह तो वास्तविकता हुई। उसमें आपका कुछ नहीं चलेगा। लेकिन शाम को *ठपका* देना न। आप नोट करके रखना कि, 'इस समय ऐसा किया था, इस समय यह किया था, इस व्यक्ति के साथ बेवजह ही झंझट की थी।' उन सभी के लिए चंदूभाई को *ठपका* देना तो आप छूट जाओगे। उसके बाद आप जवाबदार नहीं रहे, और इसलिए चंदूभाई की जवाबदारी भी छूट जाती है। क्योंकि आपकी जवाबदारी छूट गई तो चंदूभाई की जवाबदारी भी छूट गई। अगर किसी को दुःख हो गया हो तो प्रतिक्रमण करना होगा। तब कहना कि, 'चंदूभाई, अतिक्रमण किया इसलिए प्रतिक्रमण करो।'

तब हो सकते हैं पास व्यवस्थित के ज्ञान में

एक व्यक्ति व्यवस्थित का नियम पूछ रहा था कि मुझे व्यवस्थित का नियम समझाइए। तब मैंने उसे बताया कि गाड़ी में पाँच लोग जा रहे हों और तेरा कान पकड़कर गाड़ी में से उतार दें। तब भी ऐसा लगना चाहिए कि ओहोहो! यह नहीं उतार रहा है। यह तो व्यवस्थित उतार रहा है।

बैठाते समय उसने कहा हो कि बैठिए और फिर कहे कि चंदूभाई, उतर जाइए। तब चंदूभाई को तुरंत ही ऐसा ज्ञान हाज़िर हो जाना चाहिए कि व्यवस्थित ऐसा कह रहा है कि आप उतर जाओ। किसका नाम लेना है?

प्रश्नकर्ता : व्यवस्थित का नाम लेना है। व्यवस्थित कह रहा है, उतर जाओ।

दादाश्री : व्यवस्थित उतरने को कह रहा है। बाद में कुछ दूर जाने के बाद वह फिर से कहे कि, 'नहीं, नहीं। रहने दीजिए इन्हें।' वह भाई कहेगा कि, 'नहीं, मैं तो नहीं आ सकता।' तब वापस वह चंदूभाई से कहे कि, 'चलिए, तो वापस आ जाइए।' तब चंदूभाई को ऐसा समझना चाहिए कि, 'मुझे व्यवस्थित ने बुलाया है' और व्यवस्थित ने बुलाया इसलिए व्यवस्थित के अनुसार बैठ ही जाना चाहिए आपको। कुछ दूर जाने के बाद, एक फर्लांग जाने के बाद, सामने दूसरा कोई परिचित मिल जाए न, तो फिर वह कहे कि, 'ऐसा करो न चंदूभाई, आप उतर जाओ।' तब चंदूभाई को समझना चाहिए कि मुझे व्यवस्थित उतार रहा है। तो वहाँ पर मुँह नहीं फुलाना है। व्यवस्थित उतारता है तो उसमें मुँह क्या फुलाना? और फिर उतर जाना चाहिए। कुछ दूर, ज़रा दूर जाने के बाद वापस वह व्यक्ति कहे कि, 'नहीं, मैं नहीं आ सकूँगा, रहने दो न!' फिर से चंदूभाई से कहे कि, 'चंदूभाई, वापस आ जाइए, वापस आ जाइए।' तब भी ऐसा समझना चाहिए कि व्यवस्थित ने बुलाया। ऐसा नौ बार हो, तब दादा की परीक्षा में पास हो जाएगा, वीतरागता की परीक्षा में। नौ बार में मन बिल्कुल बिगड़ना नहीं चाहिए, ऐसा कहा है मैंने सभी से। यह व्यवस्थित का ज्ञान इतना सुंदर है! मनुष्य कुछ कर ही नहीं सकता। यह व्यवस्थित ही करता है और बेवजह

मुँह चढ़ाकर कहते हैं, 'मुझे नहीं आना है, जाओ आप।' दो-चार बार निकाल दिया जाए तो उसकी साहजिकता टूट जाती है।

प्रश्नकर्ता : अरे, ऐसा कहता है कि आप क्या समझते हो? क्या मैं कुत्ता हूँ जो मुझे हड़का रहे हो?

दादाश्री : नहीं, यानी व्यवस्थित करता है और लोग मानते हैं कि वह कर रहा है। वह निमित्त है, उसे ऐसे काटने नहीं दौड़ना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन आपने तो इस दृष्टांत पर से व्यवस्थित की ग़ज़ब की बात बता दी है।

दादाश्री : नौ बार उतारे तब भी 'व्यवस्थित उतार रहा है', वह नहीं उतार रहा है। उसके हाथ में क्या है? संडास जाने की भी शक्ति नहीं है तो वह बेचारा क्या कर लेता? वह कैसे उतार सकता है? उसे आगे वहाँ मोटर टकराए तो वह मर जाएगा!

नौ बार का नियम मैंने बताया है। मैंने बताया, नौ बार तक यदि मनुष्य ऐसे संभाल ले तो मैं समझूँगा कि मेरे ज्ञान में पास हो गया। हो गया कम्प्लीट। दो-चार बार तो धीरज रहता है लेकिन फिर चेहरे पर बदलाव आता जाता है। नौ बार गाड़ी में बैठे और नौ बार उतार दे, तब भी व्यवस्थित के ज्ञान को न चूके, उसे कहते हैं अपना ज्ञान! व्यवस्थित उतारता है और व्यवस्थित चढ़ाता है।

प्रश्नकर्ता : ऐसा बिल्कुल पक्का हो जाना चाहिए।

दादाश्री : ऐसा हो तभी काम का है! ऐसा है यह विज्ञान। राग-द्वेष नहीं होते, निरंतर वीतरागता रहती है। व्यवस्थित के आधार पर संयम का पालन हो सकता है। व्यवस्थित के ज्ञान का आधार और खुद के स्वरूप की जागृति के आधार पर पूरी तरह से संयम का पालन किया जा सकता है। आपको समझ में आया न?

प्रश्नकर्ता : दादा, यह तो एम.डी. की परीक्षा से भी बड़ी परीक्षा है।

दादाश्री : नहीं, यह तो अठारह-बीस साल पहले कहा था। किसी भाई की गाड़ी जा रही थी यहाँ से सत्संग के लिए, यहाँ पावागढ़ जा रहे थे, ऐसे जा रहे थे। उस समय एक-दो बार उतार दिया। इसलिए सभी से कह दिया कि आपको उतार दे तो व्यवस्थित उतारता है ऐसा ही मानना चाहिए। नौ बार उतारे और नौ बार चढ़ाए तो अंदर ऐसा नहीं लगना चाहिए कि इसने मुझे उतार दिया। जब फिर से बुलाएगा तब आपका चेहरा फूला हुआ दिखाई देगा तुम्बे जैसा। हाँ, वह कौन होता है उतारने वाला? व्यवस्थित ही उससे बुलवाता है। व्यवस्थित ही बुलवाता है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : बुलवाता है।

दादाश्री : इस हद तक व्यवस्थित का कर्तव्य है ऐसा हमने देखा है। इसलिए हम गारन्टी देते हैं न! और सिर्फ व्यवस्थित ही ऐसा है जो कि किसी का गुनाह नहीं दिखाता। यह व्यवस्थित है, मैंने कहा है न! व्यवस्थित का तो कोई स्वार्थ नहीं होता, वह वीतरागता से देखता है।

व्यवस्थित समझ में आ जाए तो बहुत काम *निकाल* लेगा। वर्ना जब दूसरी बार बुलाते हैं न तब मुँह फूला हुआ होता है। 'अरे भाई, घड़ी भर में कैसे फूल गया? घड़ी भर में कैसे फूल गया होगा?'

प्रश्नकर्ता : दादा, वह यदि कोई बहुत बड़ा साधक हो तो पहले दो-तीन बार तक शांत रहेगा

लेकिन चौथी बार में तो सब एक साथ (खाली कर देगा) बोल देगा।

दादाश्री : हाँ, यानी इसमें धीरज रखने की ज़रूरत है।

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसी स्पष्टता प्रत्यक्ष सजीवन मूर्ति के अलावा और कहाँ से मिल सकती है!

दादाश्री : हाँ। ऐसा किताबों में नहीं है न! किताबों में नहीं है। किताबों में होता तो सभी वीतराग ही हो जाते न? व्यवस्थित को समझ जाएँ तो वीतराग ही हो जाएँगे न सभी! शास्त्रों में नहीं है, शास्त्रों में यह मार्ग ही नहीं है। मैं जो कहता हूँ न, वह पूरा मार्ग शास्त्रों में है ही नहीं। शास्त्रों में तो साधन बताए गए हैं कि, 'ऐसा करना, वैसा करना।' यहाँ पर कर्तापन का मार्ग नहीं है। यह समझने का मार्ग है। कर्तापन से भी ऊपर की स्थिति में हैं हम, भ्रांति से भी ऊपर की स्थिति में हैं इसलिए बात ही अलग है न! यह बात काम आएगी न?

बगीचे में गए हुए हों न, फिर वहाँ कोई व्यक्ति आपसे कहे कि 'जाओ।' तब यदि आपको ज़रूरत हो तो विनती करना कि, 'कुछ देर बैठ जाऊँ तो आपको हर्ज नहीं है न?' तब वह कहे कि, 'नहीं, जाओ!' तो आपको समझ जाना चाहिए कि, 'व्यवस्थित है' और वह कहे कि 'दिक्कत नहीं है' तो भी व्यवस्थित है। 'नहीं उतारे', तो भी व्यवस्थित है और 'उतार दे' तो भी व्यवस्थित है। इतनी सी बात को समझ जाएँ तो हल आ जाएगा। करोड़ों सालों में भी समझ में आ सके, ऐसा नहीं है। हमारे ज्ञान से देखा है कि चलाने वाला व्यवस्थित है।

व्यवस्थित यदि पूरी तरह से समझ में आ जाए तो पूरा भगवान हो जाएगा। जितना समझ में आया उतना भगवान हो गया।

व्यवस्थित समझ में आ जाए तो मन में सामने वाले को गालियाँ नहीं देनी पड़ेंगी। 'वे खराब हैं' मन में ऐसा बोलोगे तो आपको कर्म बंधन होगा। 'वे खराब नहीं हैं' लेकिन 'व्यवस्थित' उनसे करवा रहा है कि, 'इसे नीचा दिखाओ'। यह व्यवस्थित सब से करवाता है तभी ये सारे लट्टू घूमते हैं।

डिप्रेशन में अवलंबन व्यवस्थित का

प्रश्नकर्ता : पहले व्यवहार में लोगों की वजह से डिप्रेस हो जाते थे, उसके मुकाबले अब डिप्रेस नहीं होते।

दादाश्री : यही ज्ञान का प्रताप है।

प्रश्नकर्ता : अब डिप्रेशन नहीं आता। तो लोग ऐसा मानते हैं कि इसे बहुत मस्ती आ गई है।

दादाश्री : नहीं, यह मस्ती नहीं है। लोग डिप्रेस नहीं होते और दूसरे उपाय करते हैं, प्रकृति का अवलंबन लेते हैं इसलिए मस्ती आती है। अब वैसा अवलंबन नहीं लेना है। हमें ज्ञान का अवलंबन लेना है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान का कौन सा अवलंबन लेना है?

दादाश्री : ऐसा है न, कर्ता व्यवस्थित है। कहीं वह उसका कर्ता नहीं है। इसलिए उस वजह से डिप्रेस होने की ज़रूरत ही नहीं रही न!

यानी ज्ञान के ऐसे अवलंबन से हमें मस्ती नहीं चढ़ती। बाकी, संसार के बारे में लोग ऐसा कहते हैं कि, 'इसकी प्रकृति ही ऐसी है।' ऐसा

अवलंबन लेकर चला लेते हैं। हमें ऐसी ज़रूरत नहीं है।

अपनी पाँच आज्ञाएँ ही ऐसी हैं, इनमें सबकुछ आ जाता है और मस्ती नहीं चढ़ती, कुछ भी नहीं होता। विकारी भाव उत्पन्न नहीं होते।

'व्यवस्थित' की समझ से वीतराग हो सकते हैं

आप शुद्धात्मा हो गए यानी नीलकंठी खानदान वाले हो गए। आप अब हँसते मुख से (अपमान रूपी) ज़हर पीते हो। रो-रोकर तो सभी पी रहे हैं। बाहर के लोगों को पीए बिना चलता है क्या? रो-रोकर पीते हैं। सामने वाले को गालियाँ देकर पीते हैं। हम लोग हँसते हुए पी लेते हैं। 'ला भाई, किस चीज़ का प्याला लाया है?' तो कहता है कि, 'पोइज़न' (ज़हर) है। 'ला पी लेते हैं हम', और फिर वह व्यवस्थित है। व्यवस्थित नहीं होता, तो मैं कहता कि, 'मत पीना भाई। वर्ना आदत पड़ जाएगी।' सामने वाले को ज़हर के प्याले पिलाने की आदत पड़ जाएगी। लेकिन नहीं, व्यवस्थित है। वह लाएगा कहाँ से लेकिन? सात प्याले थे, तो सात के बाद आठवाँ कहाँ से लाएगा? भले ही आदत पड़ जाए फिर भी। वर्ना बाहर के लोग तो क्या कहते हैं कि, 'उसे गलत आदत पड़ जाएगी। इसके बजाय उसे मारो।' यानी आदत नहीं पड़ने देते। हमें क्या लेना-देना? व्यवस्थित में सात प्याले होंगे तो सात देगा। यदि उसे आदत पड़ेगी तो उसकी ज़िम्मेदारी होगी। गाय के सींग गाय को भारी! एक गाय के सींग बहुत बड़े हो जाएँ तो, भार किसे लगेगा? उसी को न? जबकि खुद तो नीलकंठी खानदान वाला बन जाएगा!

जगत् के लोग ऐसा नहीं समझते कि व्यवस्थित है, लेकिन 'जो हुआ वह सही है', ऐसा कहते हैं। लेकिन हमें व्यवस्थित है ऐसा समझ लेना है। अब, अपने महात्मा बहुत हुआ तो चार बातों में व्यवस्थित समझे होंगे लेकिन फिर कहते हैं कि मेरा अपमान होते ही परेशान हो जाता हूँ। लेकिन फिर तुरंत ही व्यवस्थित समझ में आए तो स्थिरता रहती है। यह तो ऐसा है न, कितनी सारी बातें रह गई होती हैं। व्यवस्थित को समझ लिया हो न, तो उसे राग-द्वेष होंगे ही नहीं। समझ लिया, ऐसा तो तब कहेंगे जब व्यवस्थित को एक्ज़ेक्ट समझे। अपमान होते ही 'व्यवस्थित है' कहकर और खोजबीन में लग जाना है कि, 'यह गोली कैसे लगी? आई कहाँ से? मारने वाला कौन है? क्या हुआ? किसे लगी? हम कौन हैं?' लेकिन जब तक यह व्यवस्थित समझ में नहीं आता तब तक ऐसा ही समझता है कि, 'इसने मुझे मारा है। मैंने खुद देखा है न!' अत: यदि इस व्यवस्थित को समझ गया होता न, तो वीतराग हो जाता।

अपना धार्युं होता है कितना?

यदि हम कर्ता होते न, तो अपना *धार्युं* (मनमानी) हो पाता। इस वर्ल्ड में यदि कोई भी व्यक्ति खुद कर रहा होता तो खुद की मनमानी ही करता लेकिन वैसी मनमानी एक सेकन्ड भी नहीं हो पाती। यह तो, करता है कोई और, लेकिन खुद इगोइज़म करता है कि, 'मैं करता हूँ', बस। इतना ही है और उन्हें मैंने लट्टू कहा है। पूरे वर्ल्ड के मनुष्यों को लट्टू कहा है।

वास्तव में तो वह कुछ भी नहीं करता, 'इट हैपन्स' हो रहा है। आप जब सो रहे होते हो, उस समय क्या रात नहीं बीतती?

प्रश्नकर्ता : हाँ, बीतती है।

दादाश्री : तो क्या फिर सुबह के सात नहीं बजेंगे?

प्रश्नकर्ता : बजते हैं।

दादाश्री : लोग चाय-पानी नहीं पीते? पीते ही हैं। सबकुछ हो रहा है और मन में कहता है, 'मैं कर रहा हूँ।' उसे भ्रांति से ऐसा भासित होता है, ऐसा लगता है कि, 'मैं ही कर रहा हूँ।' मेरे अलावा कोई और दिखाई नहीं देता। कैसे दिखाई देगा तुझे? जब वहाँ तेरे पास दृष्टि ही नहीं है! और इन आँखों के पास भी दृष्टि कहाँ है? अरे, चश्मा ले आता है और लगाकर घूमता है। शर्म नहीं आती तुझे? शर्म आनी चाहिए कि चश्मा लगाना पड़ा!

भयंकर भूल, धार्युं करने की

अपना *धार्युं* अनुसार हो, ऐसा व्यवस्थित होता है क्या?

प्रश्नकर्ता : होता ही नहीं है ऐसा व्यवस्थित।

दादाश्री : क्यों, अपना *धार्युं* अनुसार नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : '*धार्युं* करना', वही गुनाह है? व्यवस्थित का *धार्युं* होने देना है?

दादाश्री : ऐसा! यानी तू इच्छा नहीं रखता? यह तो *धार्युं* किए बगैर रहता नहीं।

प्रश्नकर्ता : यानी इस तरह *धार्युं* करना नहीं होता है लेकिन संयोग ही डिसाइड कर देते हैं कि अब कल कहाँ जाना है और ऐसा नहीं करना है या ऐसा करना है। इसलिए फिर *धार्युं* करना रहता ही नहीं है।

दादाश्री : पर तू तो *धार्युं* करता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादाजी।

दादाश्री : फिर उस अनुसार नहीं होता तो क्या करना चाहिए, रोना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : फिर जब उलझ जाता है तब पता चलता है कि मार खाई। *धार्युं* नहीं होता, तब फिर अंदर सफोकेशन (घुटन) होता है। तब फिर जागृति आती है और फिर जुदापन आ जाता है।

दादाश्री : ऐसी भूलें हुई हैं।

प्रश्नकर्ता : *धार्युं* करने से तो, अभी तक जो भूलें हुई हैं न, अगले जन्म के कर्म बंधन के लिए। क्योंकि *धार्युं* करना था और *धार्युं* के अनुसार नहीं हो पाता लेकिन इससे अगले जन्म की तैयारी ज़रूर हो जाती है। ऐसा ही है न?

दादाश्री : ऐसा ही है, अगले जन्म के बीज डलते हैं। जैसे ही व्यवस्थित को गलत कहा कि बीज डलता है। इस व्यवस्थित को भगवान जैसी शक्ति कहते हैं। इसके बारे में कुछ गलत नहीं बोलते लेकिन इस पर शंका की तब भी बीज डलता है।

प्रश्नकर्ता : कर्ताभाव वाली पूरी जो दृष्टि है, वही पूरा अगला जन्म बँधवाती है?

दादाश्री : हाँ। वही, और कौन? अहंकार है न वही।

प्रश्नकर्ता : और इस व्यवस्थित की आज्ञा से वह दृष्टि छूट जाती है!

दादाश्री : छूट जाती है और व्यवस्थित ही है। आखिरकार व्यवस्थित के अधीन ही करना पड़ता है। उसके बजाय यदि पहले ही सीधे तरीके से कर ले तो क्या बुरा है? आखिरकार व्यवस्थित को मान्य करना ही पड़ता है न?

प्रश्नकर्ता : मान्य करना ही पड़ता है न! और उसी अनुसार होता है। व्यवस्थित के अधीन ही होता है।

दादाश्री : उसके अधीन ही होता है न! उसे राज़ी खुशी से स्वीकार लेंगे तो आनंद रहेगा और फूलिशनेस (मूर्खता) करेंगे तो अंदर दुःख होगा। करता है तू फूलिशनेस?

प्रश्नकर्ता : कई बार ऐसा हो जाता है। 'व्यवस्थित है' ऐसा कहने पर भी मन मानता नहीं है न? छल-कपट करता ही है।

दादाश्री : नहीं माने ऐसा मन है? यानी व्यवस्थित या कोई और ज्ञान को समझ ही नहीं पाता न!

प्रश्नकर्ता : इस तरह से बहुत हिल जाता है, पूरा!

दादाश्री : तुझे भी ऐसा हो जाता है?

प्रश्नकर्ता : मुझे तो और भी जल्दी होता है।

दादाश्री : तुझे होता है? दोनों बिल्कुल कमज़ोर हो! वर्ना यह तो कमज़ोर नहीं पड़ता। व्यवस्थित कह दिया तो कह दिया!

प्रश्नकर्ता : यानी यह सब जो ठीक हुआ है वह पूरा बिगड़ जाता है।

दादाश्री : भला कोई क्या बिगाड़ सकता है हमारे घर में? एक-दो दिन कोई बिगाड़ लेगा, फिर तीसरे दिन से उसके जोड़ ही तोड़ देंगे न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन फिर ऐसा लगता है कि ऐसा-कैसा व्यवस्थित?

दादाश्री : व्यवस्थित की फिर से गलती निकाल रहा है? ओहोहो! अलग ही तरह का है! तूने ऐसा नहीं कहा कभी भी, नहीं? ये तो तुझसे भी ज़्यादा तेज़ हैं! यह तो बहुत विषम है! लोगों को *धार्युं* करवाने की आदत पड़ गई है न, इसलिए व्यवस्थित कड़वा आता है। व्यवस्थित यानी व्यवस्थित। वर्ना अव्यवस्थित नहीं कह देते हम? अंधेरी रात में चाहे कभी भी हो, स्वीकार करने जैसी चीज़ है वह! ऐसा-कैसा व्यवस्थित? बुद्धि दिखाती है! उस बुद्धि को इतना अधिक सहलाया होता है इसलिए चढ़ बैठती है फिर!

बुद्धि दखल नहीं दे तो व्यवस्थित लगेगा ही उसमें। इसमें तो सिर्फ बुद्धि ही बीच में दखल देती है। जैसे बुद्धि सही होगी तो ऐसा नहीं करेगी। दखल तो उल्टी बुद्धि, विपरीत बुद्धि करती है। सीधी बुद्धि दखल नहीं करती।

प्रश्नकर्ता : *धार्युं* करने की झंझट बुद्धि ही करती है। इसीलिए जब उसका *धार्युं* नहीं होता तब दखल देती है।

दादाश्री : तुझे किस-किस चीज़ में ऐसा होता है, खाने को लेकर? नींद को लेकर?

प्रश्नकर्ता : खाने को लेकर होता है, नींद को लेकर खास नहीं होता।

दादाश्री : नींद की बाबत में सुख! उसमें नहीं होता। खाने को लेकर क्या होता है? खाने के टेबल पर क्यों?

प्रश्नकर्ता : नहीं, ऐसा कुछ भी नहीं।

दादाश्री : तो क्या होता है?

प्रश्नकर्ता : यह तो ऐसा है कि प्याज़-आलू खाने की इच्छा नहीं होती, तो वही मिलते हैं। ऐसा सब है इसीलिए मन में वैसा हो जाता है।

दादाश्री : जो खाने को मिलता है वह क्या आपको कुछ कहता है? मिलेगा तो सही न। संयोग है न! वियोगी स्वभाव वाला है फिर।

प्रश्नकर्ता : सेवा को लेकर ज़्यादा होता है।

दादाश्री : सेवा को लेकर क्या?

प्रश्नकर्ता : कभी कोई निकाल दे। कभी कोई आने नहीं दे, जब ऐसा कुछ होता है तब अंदर दखल हो जाता है।

दादाश्री : कोई निकाल दे, वह तो बड़ा न्याय कहा जाएगा। कोई निकाल सकता है क्या? वर्ना आप सवा सौ रुपये दो तब भी कोई निकालेगा क्या? ऐसा इनाम मिलता है क्या कभी?

प्रश्नकर्ता : मिलता है न कभी-कभी।

दादाश्री : ऐसा! बहुत अच्छा कहा जाएगा। मैं तो नोट करके रखता हूँ। बहुत अच्छा कहा जाएगा। तुझे निकाल दे तो किसी का दोष नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन जब यहाँ अंदर आने का फोर्स होता है तब निकाल देने पर दुःख होता है न?

दादाश्री : हाँ। फोर्स की वजह से! उल्टा फोर्स हो तभी निकालते हैं न! वर्ना दुनिया में कोई नहीं निकालता है। उल्टा फोर्स हो तो, जहाँ पुलिस वाले रोकते हों वहाँ घुसने जाए तब तो फिर मारेंगे डंडा! और निकाल देने को व्यवस्थित समझेगा तो बहुत आनंद होगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा रहता है कि, 'व्यवस्थित है', जो निकालता है उसका दोष भी नहीं दिखाई देता लेकिन खुद को अंदर ऐसा लगता है कि कैसे अंतराय कर्म लेकर आए हैं कि निकलना पड़ रहा है? उस आधार पर अंदर दुःख होता है।

दादाश्री : पाँच लोगों से बात पूछे न, कि इसमें किसका दोष है?

जिसे निकाल दिया है न, उसी का दोष है। फिर कोई ऐसी बात करे तो मूर्ख ही कहा जाएगा न! हक का तो मिले बगैर रहेगा ही नहीं। *अणहक्क* (बिना हक्क) का तो ढूँढने पर भी नहीं मिलेगा। मार खाने पर भी नहीं मिलेगा। उसके बजाय सीधे ही हो जाएँ, तो क्या बुरा है? तू सीधा हो गया है न? *धार्युं* करवाने की अपेक्षा तो अपने घर पर भी पूरी नहीं होती। और आपको तो भला सेवा करना ही कहाँ आता है? आपको इस पूरे समूह में, किसी को भी सेवा करना आता ही नहीं न! जब सेवा करने के समय अवकाश मिलता है तब वे खुद ही न जाने कहाँ चले गए होते हैं! फिर कोई और आ गया हो तब उसे निकालने की तैयारी करते हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी उस समय 'व्यवस्थित' कहकर केस को एक तरफ रख देना चाहिए?

दादाश्री : नहीं। एक तरफ नहीं रखना है। व्यवस्थित को एक तरफ रखने की ज़रूरत ही नहीं है। आपको तो उस समय ऐसा देखकर आनंद होना चाहिए कि, 'ओहोहो! व्यवस्थित इनके अधीन हो गया, कैसा आ गया है!' आपको ऐसा आनंद होना चाहिए तो वह हेल्प करेगा और आपके भी अधीन हो जाएगा! बाकी सब न जाने कहाँ चले गए होंगे और आपके ही हिस्से में सेवा आ जाएगी।

आपका 'व्यवस्थित' इस एक जिंदगी के लिए ही है। इस जिंदगी में यदि आप उल्टा करोगे तो आपका 'व्यवस्थित' फिर से खराब हो जाएगा। यदि व्यवस्थित शक्ति पर छोड़ दोगे तो आपका ज़रा सा भी अहित नहीं करेगी, बल्कि हित ही करेगी।

सर्व क्षेत्र में, सर्व काल में, समाधानकारी

यह अंतरक्लेश और शोक, इन दोनों में से ये सारे दुःख उत्पन्न होते हैं, ये सारे रोग। ज्ञानी

पुरुष का ऐसा, इस अक्रम का आनंद यदि भोगे न तो रोग फिर शांत हो जाते हैं। नॉर्मल हो जाता है फिर। ब्लड प्रेशर तो कई लोगों के कम हो गए हैं और ठीक भी हो गए हैं कई लोगों के। फिर झंझट नहीं रहती। ज्ञानी पुरुष ने कहा है कि व्यवस्थित है इसलिए फिर उस तरफ देखने को रहता ही नहीं है न!

बस, अब हमें आत्मा प्राप्त हुआ है इसलिए हर तरफ से नुकसान होना हो तो हो जाए, कहना। जहाँ से होना हो वह हो जाए। 'व्यवस्थित' से बाहर कुछ भी होने वाला नहीं है। 'ज्ञान' के साथ फिर 'व्यवस्थित' दिया हुआ है, वर्ना मन में ऐसा होगा कि धीरे-धीरे सब तरफ से नुकसान हो जाएगा तो? लेकिन 'व्यवस्थित' है, कोई बाप भी नाम ले सके ऐसा नहीं है। व्यवस्थित की शक्ति इतनी अधिक काम कर रही है।

प्रश्नकर्ता : व्यवस्थित शक्ति को ऐसे सारे सूक्ष्म काम करने होते हैं, पर इसकी मात्रा कितनी? इतने सूक्ष्म काम करती रहती है व्यवस्थित शक्ति!

दादाश्री : अरे! ये सब तो स्थूल काम हैं। बहुत सूक्ष्म काम करती है। ये सब तो स्थूल काम हैं, जो आँखों से देखे जा सकते हैं, कानों से सुने जा सकते हैं, ऐसे काम हैं। व्यवस्थित शक्ति तो बहुत सूक्ष्म कामों तक पहुँचती है।

प्रश्नकर्ता : यह सारा ही, पूरा चित्रित किया हुआ है एक्ज़ेक्ट, एक-एक क्षण, एक-एक सेकन्ड तक का चित्रित किया हुआ है?

दादाश्री : एक्ज़ेक्ट, बिल्कुल चेन्ज बगैर। ज्योतिषी से भूल हो सकती है क्योंकि हिसाब लगाने में तो गलती हो सकती है न, वह कैल्क्युलेशन है। यह तो एक्ज़ेक्ट है! आपको एक भी ऐसा अनुभव हुआ है?

प्रश्नकर्ता : ऐसे असंख्य अनुभव हैं, बहुत सारे।

दादाश्री : कितना सुंदर साहजिक मार्ग है! बिना मेहनत का! कोई भी मेहनत करनी पड़ी है आपको? और आनंद कम नहीं होता है न?

प्रश्नकर्ता : आनंद, आनंद रहता है। कभी ज़रा विचलित हो जाते हैं लेकिन फिर अंदर से वह एकदम जाग्रत हो जाता है इसलिए आनंद में आ जाते हैं। लेकिन पाँच आज्ञा के प्रति उसे जाग्रत तो रहना चाहिए न?

दादाश्री : पाँच आज्ञाएँ इस ज्ञान की रक्षा करती हैं। इनमें से एक आज्ञा तो निरंतर पाल सके ऐसी ही है, क्योंकि व्यवस्थित को समझ जाता है।

प्रश्नकर्ता : उससे तो बहुत बड़ा समाधान है।

दादाश्री : पूर्ण समाधान! पूरा जगत् असमाधान में है। यह 'ज्ञान' नहीं होने की वजह से असमाधान में है और इसीलिए चिंताएँ-वरीज़ में ही फँसा हुआ है। प्याले टूट जाएँ तो भी कलह। व्यवस्थित में तो बहुत समाधान है। इसलिए इसे सर्व समाधानी ज्ञान कहा जाता है। यह सर्व समाधानी, एट एनी टाइम, किसी भी जगह पर समाधान देता ही है, किसी भी संयोग में।

'व्यवस्थित' तो बहुत ऊँची चीज़ है। 'व्यवस्थित' समझे न, तो उसे पूरा दिन समाधि ही रहेगी। ये तो व्यवस्थित के ज्ञान से भविष्य की चिंता खत्म हो जाती है और भूतकाल की चिंता तो जा ही चुकी है इसलिए वर्तमान में रह सकता है। यह संसार 'व्यवस्थित' है, ऐसा समझ में आ जाए तो कई दुःख कम हो जाएँगे।

जय सच्चिदानंद

समझ हिताहित की...

भगवान क्या कहते हैं कि मेरी बात को समझो, जिसे समझने से आपका हित होगा। जिसे हिताहित का भान नहीं हो, उसे मनुष्य कहेंगे ही नहीं न! जो व्यापारी नफा-नुकसान को नहीं समझता, उसे व्यापारी कैसे कहेंगे? यहाँ दुकान लगाकर बैठा है लेकिन नफे-नुकसान के व्यापार को नहीं समझे तो क्या होगा? दिवालिया निकालना पड़ेगा! उसी तरह यह हिताहित का भान अर्थात् जिससे इस लोक का हित और परलोक का हित, दोनों संभल जाएँ वह हिताहित का भान कहलाता है। सिर्फ परलोक के हित को संभाले तो एक भी नहीं संभल पाएगा। यह तो, पहले इस लोक के हित की आवश्यकता है, फिर उसमें परलोक का हित समाया हुआ ही होता है। जो इस लोक में हित करता है, उसका परलोक का हित उसमें समाया हुआ ही होता है।

जो खुद का अहित ही कर रहा हो, वह दूसरों का क्या हित करेगा? जो खुद का हित करें, वे लोग दूसरे का, पर का हित कर सकते हैं। ये लोग तो, जैसे मुँह पर अरंडी का तेल चुपड़ा हो न, ऐसे दिखते हैं। उसका क्या कारण है? 'अरंडी का तेल चुपड़ा है?' तब कहेंगे, 'नहीं, अरंडी का तेल बहुत महँगा हो गया है, वह कहाँ से चुपड़ेंगे?' यह तो भीतर पूरे दिन अजंपा (बेचैनी, अशांति, घबराहट) रहा करता है कि ऐसा करूँ या वैसा करूँ? ऐसा करूँ या वैसा करूँ? ऐसा भीतर चलता रहता है! उससे फिर अरंडी का तेल चुपड़े बगैर मुँह पर तेल दिखता है! अरे, संडास जाने की तो ताक़त है नहीं! इस वर्ल्ड में कोई ऐसा जन्मा नहीं है कि जिसकी खुद की संडास जाने की स्वतंत्र शक्ति हो। अरे, तू क्या कर रहा है यह? क्यों बेकार सोचता रहता है? सोचने की कोई हद होती होगी या नहीं होगी? दवाई पीने की हद होती है या नहीं होती? आप से कहा हो कि इस दवाई से रोग मिट जाएगा, लेकिन ऐसी सात-एक दवाई की शीशियाँ पीनी पड़ेंगी। तो यदि आप सभी डोज़ एक ही दिन में पी जाओ तो? डोज़ तो हिसाब से ही लेनी चाहिए या एक ही दिन में ले लेनी चाहिए? कुछ रात को बारह बजे तक ओढ़कर योजनाएँ गढ़ते रहते हैं। अरे, किसलिए योजनाएँ कर रहा है? यह सब तू तेरा खुद का हित बिगाड़ रहा है! इन गढ़ी जा चुकी योजनाओं को किसलिए बिगाड़ रहे हो? जो गढ़ी जा चुकी हैं, एक्सेप्ट हो चुकी हैं, मंज़ूर हो चुकी हैं, उसमें आप क्या करोगे अब? बेकार ही क्यों ऐसा करते हो? खुद अपना हित बिगाड़ रहे हो! ये तो सभी गढ़ी जा चुकी योजनाएँ हैं, इनमें आप क्यों नया गढ़ रहे हो? यह तो आप अगले जन्म का गढ़ रहे हो!

किसी के सिर पर घने बाल (माथेरान) होते हैं और किसी के सिर पर वीरान यानी गंजापन आ जाता है। माथेरान अर्थात् जिसके बाल मेरे जैसे घने हों, वह माथेरानवाला गंजापन ढूँढता है कि मुझे ऐसा गंजापन क्यों नहीं आता और गंजा आदमी बाल बढ़ाने की दवाई सिर पर लगाता है, ऐसा है यह जगत्! यानी अपने लिए तो जो हुआ वही सही! गंजापन आया तो गंजापन सही और रान रहा तो रान सही। किसी का देखकर हमें क्या करना है? पहले एक-दो लोग मुझसे कहते थे कि, 'मेरे सिर पर गंज क्यों नहीं पड़ती?' मैंने कहा, 'तुझे गंज का क्या काम है?' तब कहता है, मैंने ऐसी

कहावत सुनी है कि 'शायद ही कोई निर्धन गंजा।' जो गंजा है, वह शायद ही निर्धन होगा। यानी कि ये धनवान होने के लिए गंजापन लाते हैं! और गंजे लोग बाल उगाने के लिए दवाई लगाते रहते हैं! ऐसा यह घनचक्कर है जगत्। खुद के हिताहित का भान नहीं है। खुद के हिताहित का बिल्कुल भी भान नहीं है। सांसारिक हिताहित का भान भी खो दिया है। सांसारिक हित किसमें है वह भी पता नहीं, तो फिर उस मोक्ष के हिताहित का भान तो कैसे हो सकता है?

अभी तो, सांसारिक हित का भान किसे कहेंगे? जिसमें नैतिकता की कक्षा हो, प्रामाणिकता की कक्षा हो, जिसका लोभ नॉर्मल हो, जिसमें कपट नहीं हो, मान भी नॉर्मल हो, उसे सांसारिक हित का भान कहेंगे। वर्ना जो एब्नॉर्मल लोग हैं, उन्हें कहीं हित का भान रहता होगा? जो लोभांध हो चुका हो, वह न जाने किसके साथ सिर टकरा दे, वह कैसे कहा जा सकता है? जिसे सांसारिक हित का भान हो, वह मनुष्य कहलाता है। वर्ना इनका तो यदि फोटो खींचें तो लोग कहेंगे ज़रूर कि मनुष्य का फोटो है, लेकिन भीतर मनुष्य के गुण नहीं हैं।

हमें इस मनुष्यजन्म में क्या काम करना है? तब कहें कि मोक्ष हेतु के लिए पर्याप्त हो उतना, उतना ही काम पूरा करना है। मोक्ष के हेतु के लिए जो साधन मिल जाएँ, उन साधनों की आराधना के लिए ही यह मनुष्य देह है। अपने हिन्दुस्तान के लिए इतना ही है। बाकी दूसरे लोग तो जो करते हैं, वही करेक्ट है। उसमें उनकी कोई भूल है ही नहीं।

लोगों को तो खुद के संपूर्ण हित की खबर ही नहीं है। इन्हें तो शारीरिक हित की खबर है, भौतिक हित की खबर है। लेकिन अध्यात्मिक हित की उन्हें खबर नहीं है इसलिए भौतिक का ही कार्य करते हैं!

आँखें मिचीं हुई थीं तभी तक सीधा था। जागते ही वापस शोर-शराबा और कलह मचा देता है! कि 'सब टेढ़ा है, ऐसा है, वैसा है, यह चाय केतली में क्यों नहीं लाए?' अरे छोड़ न यह सब, चाय पी न शांति से! फिर भी कहेगा, 'चाय फीकी क्यों है?' वह केतली सिर पर मारे तो फिर क्या होगा? जागा और आँखें खुलीं कि कलह करके रख देता है। ऐसा माल है या नहीं? जागा तभी से यही का यही, 'चाय केतली में क्यों नहीं लाए?' चाय कड़क नहीं बनी! अरे, सीधा रहकर पी ले न चुपचाप, कड़क और अच्छी कहे बिना! लेकिन कितनी तरह की कमियाँ निकालता रहता है। तब फिर पत्नी चिढ़ ही जाएगी न कि इन्हें आदत ही बुरी पड़ी हुई है, लेकिन मन में समझ जाती है, बोल नहीं पाती। मन में कहेगी कि, 'यह मूलत: टेढ़ा ही है। शादी करने आया तभी से टेढ़ा है।' ऐसा सब समझती है। लेकिन मुँह पर किस तरह बोले? लेकिन फिर वह सीमा में न रहे तो बहू लाज में नहीं रहती। इसीलिए एक दिन पत्नी सामने बोलती है। सुबह उठते ही कलह करती है न? असल खाने-पीने की चीज़ें हैं। किसी काल में नहीं थीं ऐसी चीज़ें मिल रही हैं, तब इन लोगों को भोगना नहीं आता। सारी समझ ही टूट गई है। 'जीवन किस तरह जीएँ?' उसका किसी प्रकार का भान ही नहीं है।

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम

राजकोट

8 दिसम्बर (मंगल) रात 7-30 से 10 - **सत्संग** और **9 दिसम्बर** (बुध) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**
स्थल : ओपन ग्राउन्ड, ओपेरा बिल्डिंग के पास, कोठारिया गाँव, राजकोट. **संपर्क :** 9909977440

देवभूमि द्वारका

13 दिसम्बर (रवि) दोपहर 3-30 से 7 - **ज्ञानविधि**
स्थल : परेड ग्राउन्ड, भड़केश्वर महादेव मंदिर रोड, सर्किट हाउस के पीछे, देवभूमि द्वारका. **संपर्क :** 9067051111

अडालज

26 दिसम्बर से 2 जनवरी - आप्तवाणी 14 भाग-5 पर सत्संग पारायण
समय : सुबह 10 से 12-30 और शाम 4-30 से 7
नोट : गुजराती किताब के पेज नंबर 105 से वाचन होगा। (हिन्दी-अंग्रेजी में ट्रान्सलेशन उपलब्ध रहेगा।)
2 जनवरी - रात 8-30 से 10 - **परम पूज्य दादाश्री की पुण्यतिथि पर विशेष भक्ति**
3 जनवरी - (रवि) सुबह 10 से 12-30 - **श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**
सूचना : रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। रजिस्ट्रेशन की अधिक जानकारी **Akonnect** ऐप पर उपलब्ध है.

आत्मज्ञानी पूज्य नीरूमाँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

कर्नाटक

हुबली	**दिनांक : 16-17 दिसम्बर**	**संपर्क : 9513216111**
बेंगलूर	**दिनांक :18 से 20 दिसम्बर**	**संपर्क : 9590979099**

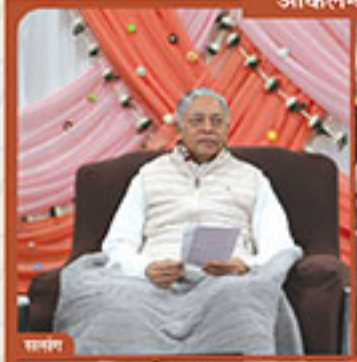
समय और स्थल की जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए भारत में टी.वी. चैनल पर...

- **'साधना'** पर हर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 और दोपहर 3 से 4 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-45 (मराठी में)
- **'आस्था कन्नड़ा'** पर हर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में)
- **'दूरदर्शन चंदना'** पर हर रोज़ शाम 7 से 7-30 (कन्नड़ा में)
- **'दूरदर्शन गिरनार'** पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9-30 से 10-30 (गुजराती में)
- **'वालम'** पर हर रोज़ शाम 6 से 7 (सिर्फ गुजरात राज्य में) (गुजराती में)

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687, **भावनगर :** 9313882288, **अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** 9574001445, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

ऑकलैन्ड : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 3 से 5 अक्टूबर 2026


सत्संग




ज्ञानविधि


दर्शन

हांगकोंग : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 9 से 11 अक्टूबर 2026


सत्संग




ज्ञानविधि




इन्फोग्राफ


पिकनिक


भजन

नवम्बर 2026
वर्ष-22 अंक-1
अखंड क्रमांक - 253

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/036/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

'व्यवस्थित' समझ में आ जाए तो यहीं पर मोक्ष बरते

(यह ज्ञान लिए हुए लोग) व्यवस्थित का ज्ञान समझ गए हैं इसलिए तो बिल्कुल भी असर नहीं होता। हम ज्ञान देते हैं, तब मोक्ष देते हैं। फिर मोक्ष जाएगा नहीं, लेकिन वह व्यवस्थित को समझे तो! वडोदरा में इकलौता लड़का कटकर मर गया, तीस साल का। उसके फादर पर बिल्कुल भी असर नहीं हुआ, उसका क्या कारण? 'व्यवस्थित' को समझ गए थे। उसे किसी गाड़ी ने नहीं मारा था। गाड़ी तो उनमें से एक संयोग था। सभी संयोग इकट्ठे हुए इसलिए ऐसा हो गया। उसमें भगवान का भी नहीं चल सकता। लेकिन व्यवस्थित समझ में आ जाए तो! दादा ने वह सेफसाइड दी है लेकिन खुद जरूरत से ज्यादा अक्लमंदी करता है तो अनसेफ हो जाता है!

- दादाश्री

DBF • Adalaj

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner.
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road,
At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.